डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (मध्यप्रदेश)

(केंद्रीय विश्वविद्यालय)

ख़बरों में विश्वविद्यालय

फरवरी 2022

कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता को मिला अंतरराष्ट्रीय फेलो अवार्ड

सागर(नवदुनिया प्रतिनिधि)। डा. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता को अंतरराष्ट्रीय फेलो अवार्ड दिया गया है।

इंटरनेशनल जूलाजिस्ट एसोसिएशन की एक्ज्यूकेटिव कमेटी ने प्रो. गुप्ता को यह अवार्ड जंतु विज्ञान के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया है। यह संगठन जीव-जंतुओं और पर्यावरण संरक्षण की दिशा में अध्ययन एवं शोध के लिए कार्यरत है।

इंटरनेशनल जूलॉजिस्ट एसोसिएशन के अध्यक्ष डा. आशीष त्रिपाठी ने अवार्ड सर्टिफिकेट एवं मेडल प्रेषित किया है।

विवि की कुलपति प्रो नीलिमा गुप्ता को मिला अंतर्राष्ट्रीय फेलो अवार्ड

सागर। डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो नीलिमा गुप्ता को अंतर्राष्ट्रीय फेलो अवार्ड प्रदान किया गया है। इंटरनेशनल जूलॉजिस्ट एसोसिएशन की एक्ज्यूकेटिव कमेटी ने प्रो. गुप्ता को यह अवार्ड जंतु विज्ञान के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया है। यह संगठन जीव जंतुओं और पर्यावरण संरक्षण की दिशा में अध्ययन एवं शोध के लिए कार्यरत है। गौरतलब है कि प्रो नीलिमा गुप्ता ने जलचर प्राणियों मुख्यत: मछलियों की विभिन्न प्रजातियों पर विशेष शोध एवं अध्ययन किया है। प्रो नीलिमा गुप्ता को बायोसाइंस, एनिमल टैक्सोनामी, बायोडायवर्सिटी आदि क्षेत्रों में अकादमिक योगदान के साथ साथ शिक्षा और समाज सेवा के लिए कई पुरस्कारों से नवाजा जा चुका है। इंटरनेशनल जूलॉजिस्ट एसोसिएशन के अध्यक्ष डॉ आशीष त्रिपाठी ने अवार्ड सर्टिफिकेट एवं मेडल प्रेषित किया है।

कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता को मिला अंतरराष्ट्रीय फेलो अवार्ड

जागरण, सागर। डॉ. हरीसिंह गौर विवि सागर की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता को अंतर्राष्ट्रीय फेलो अवार्ड प्रदान किया गया है। इंटरनेशनल जूलॉजिस्ट एसोसिएशन की एक्ज्यूकेटिव कमेटी ने प्रो. गुप्ता को यह अवार्ड जंतु विज्ञान के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया है। यह संगठन जीव-जंतुओं और पर्यावरण संरक्षण की दिशा में अध्ययन एवं शोध के लिए कार्यरत है। गौरतलब है कि प्रो.नीलिमा गुप्ता ने जलचर प्राणियों मुख्यत: मछलियों की विभिन्न प्रजातियों पर विशेष शोध एवं अध्ययन किया है। प्रो. गुप्ता को बायोसाइंस, एनिमल टैक्सोनामी, बायोडायवर्सिटी आदि क्षेत्रों में अकादमिक योगदान के साथ-साथ शिक्षा और समाज सेवा के लिए कई पुरस्कारों से नवाज़ा जा चुका है। इंटरनेशनल जूलॉजिस्ट एसोसिएशन के अध्यक्ष डॉ. आशीष त्रिपाठी ने अवार्ड सर्टिफिकेट एवं मेडल प्रेषित किया है।

न्यूज विंडो

विवि में 7 से पीएचडी व पीजी की आफलाइन कक्षाएं

सागर. डॉ. हरिसिंह गौर केंद्रीय विवि में पुनः ऑफलाइन कक्षाएं शुरू होने जा रही हैं। 7 फरवरी से पीएचडी और पीजी की कक्षाएं शुरू होंगी। वहीं, यूजी की कक्षाएं 9 फरवरी से आरंभ होगी। बता दें कि कोरोना की तीसरी लहर के चलते विवि प्रशासन ने विवि में ऑफ लाइन कक्षाओं का संचालन 6 फरवरी तक बंद कर दिया था।

प्रो. राजपूत महू विश्वविद्यालय में बाह्य विषय विशेषज्ञ बने

सागर. डॉ हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र एवं समाजकार्य विभाग में पदस्थ प्रो दिवाकर सिंह राजपूत को डॉ. बीआर अम्बेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय महू के समाजशास्त्र अध्ययन मंडल में बाह्य विषय विशेषज्ञ के रूप में नामित किया गया है।

कुलपति प्रो. नीलिमा को मिला अवार्ड

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सागर. डॉ हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता को अंतर्राष्ट्रीय फेलो अवार्ड प्रदान किया गया है। इंटरनेशनल जूलॉजिस्ट एसोसिएशन की एक्ज्यूकेटिव कमेटी ने प्रो. गुप्ता को यह अवार्ड जंतु विज्ञान के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया है। यह संगठन जीव-जंतुओं और पर्यावरण संरक्षण की दिशा में अध्ययन एवं शोध के लिए कार्यरत है। बता दें कि प्रो. नीलिमा गुप्ता ने जलचर प्राणियों मुख्यतः मछलियों की विभिन्न प्रजातियों पर विशेष शोध एवं अध्ययन किया है। प्रो. नीलिमा गुप्ता को बायोसाइंस, एनिमल टैक्सोनामी, बायोडायवर्सिटी आदि क्षेत्रों में अकादमिक योगदान के साथ-साथ शिक्षा और समाज सेवा के लिए कई पुरस्कार भी मिले हैं। इंटरनेशनल जूलॉजिस्ट एसोसिएशन के अध्यक्ष डॉ. आशीष त्रिपाठी ने अवार्ड सर्टिफिकेट व मेडल प्रेषित किया है।

इलेक्ट्रिकल वाहन ग्रीन हाउस इफेक्ट को भी कम करने में महत्वपूर्ण: प्रोफेसर वर्मा

स्मार्ट बैटरी प्रबंधन प्रणाली पर राष्ट्रीय वेबिनार आयोजित

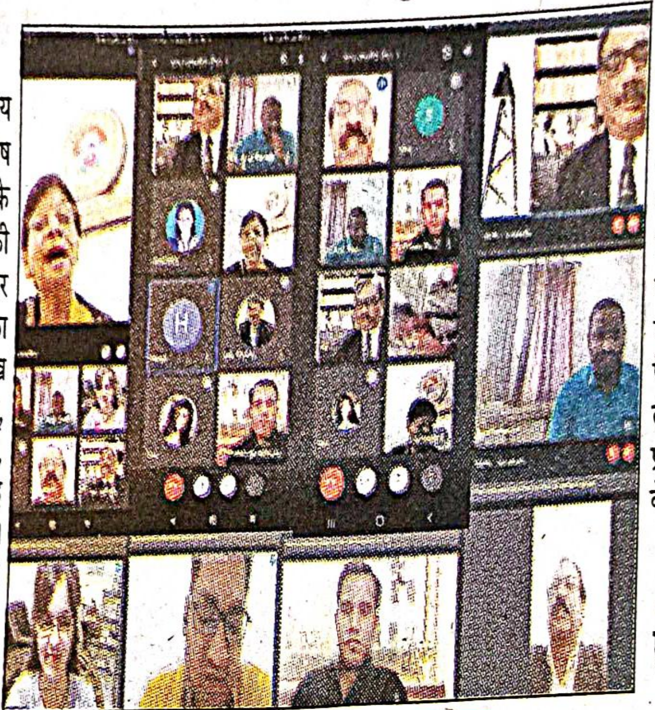

जागरण न्यूज, सागर

डॉ हरिसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय के भौतिकी विभाग में डीन एवं प्रो. आशीष वर्मा द्वारा इलेक्ट्रिक वाहन अनुप्रयोगों के लिए एक स्मार्ट बैटरी प्रबंधन प्रणाली की और एक कदम विषय पर राष्ट्रीय वेबिनार आयोजित कराया गया। जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में हैदराबाद में एक प्रमुख इंजीनियरिंग कॉलेज के डॉ अंजी रेड्डी पोलू, सहायक प्रो. भौतिकी विभाग, बीवीआरआईटी हैदराबाद कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग फॉर विमेन ने व्याख्यान दिया। उद्घाटन सत्र में सबसे पहले मां सरस्वती की वंदना की गई। वेबिनार संयोजक प्रो. आशीष वर्मा ने सभी अतिथियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत नेशनल वेबिनार में स्वागत करते हुये बताया कि वर्तमान समय में लिथियम आयन एवं अन्य प्रकार की बैटरी से चलने वाली गाड़ियां पर्यावरण प्रदूषण को रोकने के आलावा किस तरह से आम आदमी के पेट्रोल में होने वाले भारी खर्च को काफी कम कर सकती हैं एवं इलेक्ट्रिकल वाहन का उपयोग ग्रीन हाउस इफेक्ट को भी कम करने में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। भौतिक शास्त्र के विभागाध्यक्ष प्रो. रणवीर कुमार ने वेबिनार के विषय के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी। कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने भारत सरकर द्वारा इलेक्ट्रिकल वाहन की टेक्नोलॉजी के लिए किये जाने वाले नवाचार के लिए सरकार की विभिन्न योजनाओं के बारे में बताते हुए बताया की हमारे देश की केंद्रीय वित्त मंत्री श्रीमति निर्मला सीतारमन ने देश के बजट भाषण 2022 में इलेक्ट्रिक व्हीकल्स को प्रोमोट करने के लिए इलेक्ट्रिकल व्हीकल चार्जिंग स्टेशन इंफ्रास्ट्रक्चर विकसित करने को लेकर बड़ी घोषणा की है। भविष्य में पब्लिक ट्रांसपोर्ट में भी इलेक्ट्रिकल वाहनों को बढ़ावा दिया जायेगा। इस विषय पर वेबिनार आयोजित करने के लिए कुलपति ने डीन एसएमपीएस एवं वेबीनार संयोजक प्रोफेसर आशीष वर्मा को बधाई दी। टेक्निकल सेशन में डॉ. अंजी रेड्डी पोलू ने इलेक्ट्रिकल वाहन में उपयोग की जाने नवीन तकनीकी का विस्तृत विवरण देते हुए बताया कि इस क्षेत्र में किया जाने वाला नवाचार कैसे आम जन मानस के लिए उपयोगी साबित होगा । डॉ रेड्डी इस क्षेत्र में पिछले लगभग 12 वर्षों से काम कर रहे हैं। अपनी नवीन एवं महत्वपूर्ण रिसर्च के लिए उन्होंने 3 पेटेंट भी प्राप्त किये हैं डॉ रेड्डी लगभग 12 देशों में विभिन्न प्रयोगशालाओं में इस विषय के शोध के लिए भृमण किया है ।

श्रोताओं के विभिन्न प्रश्नों का दिया जवाब

शोध छात्र अरुण कुमार ने आभार प्रकट करते हुए इस विषय की महत्ता पर विचार व्यक्त किए। शोध छात्र प्रवीण लिटोरिया ने मुख्य वक्ता का परिचय देते हुए बताया कि डॉ अंजी रेड्डी पोलू सागर विश्वविद्यालय के पूर्व शोधछात्र रहे हैं। कार्यक्रम का संचालन शैरी नासिर ने किया। प्रो. नीलेश जैन एस्वाति कुर्मी आदि भी आयोजिक समिति में रहे। इस ऑनलाइन वेबिनार में डॉ. अलका, डॉ. फजल निर्बाशा, राजेंद्र दीक्षित, इंद्रा कुमार, अक्ष वर्मा, सुनील सोनी, पुष्पेंद्र सिंह, प्रेरणा गुप्ता, पुष्पांजलि पटेल, सुजाता यादव, पूजा अहिरवार, शादाब खान, सतीश गुप्ता, स्वेता पाठक, वैशाली अमृते प्रतीक्षा राजपूत, यशिका, विजय आदि 100 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया।

आचार्य शंकर की सौंदर्यलहरी सुख व मोक्ष की राह बताती है : शंकर भारती महास्वामी

सागर (नवदुनिया प्रतिनिधि)। आमतौर लोग यह मानते हैं कि अद्वैत एक अलग धर्म या संप्रदाय का नाम है, जबकि अनेक ज्ञान परंपराओं की भांति यह भी एक ज्ञान परंपरा है। इसका अर्थ है सुख, आचार्य शंकर ने अद्वैत वेदांत दर्शन के माध्यम से लोक कल्याण एवं सुख का प्रबोधन किया। उनका सिद्धांत या विचार इस मूल प्रश्न की खोज है कि मनुष्य का जन्म सफल कैसे हो सकता है। पूर्ण सुख की प्राप्ति ही जीवन का सुफल है।

कार्यक्रम के दौरान मठाधिपति शंकर भारती महास्वामी महाराज से आशीर्वाद प्राप्त करती हुई कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता। • नवदुनिया

विवि में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मठाधिपति शंकर भारती महास्वामी महाराज। • नवदुनिया

यह विचार डा. हरीसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय के पतंजलि भवन में आयोजित अद्वैत उत्सव के दौरान यडतोरे योगानंदेश्वर सरस्वती मठ मैसूर के मठाधिपति शंकर भारती महास्वामी ने अपने व्याख्यान में कही।

विश्वविद्यालय के पतंजलि भवन में हुए इस कार्यक्रम के मुख्य वक्ता महास्वामी ने आचार्य शंकर द्वारा रचित महत्वपूर्ण कृतियों में से एक सौंदर्य लहरी पर व्याख्यान देते हुए कहा कि बिना तत्वविज्ञान के पूर्ण सुख की प्राप्ति नहीं हो सकती। उन्होंने कई श्लोकों का उद्धाहरण देते हुए यह बताया कि इसमें भोग और मोक्ष प्राप्ति दोनों के बारे में बात कही गई है अर्थात सांसारिक जीवन में रहते हुए हम कैसे अपने जीवन को सार्थक बना सकते हैं और आनंद की प्राप्ति कर सकते हैं। सौंदर्यलहरी का चिंतन करने पर अद्भुत आनंद की प्राप्ति होती है। उन्होंने इसमें बताए गए श्रीविद्या तत्व के बारे में भी विस्तारपूर्वक बताया और कहा कि इस तरह के ग्रन्थ प्रस्तुत करके आचार्य शंकर ने पूरी मानव जाति पर उपकार करने का काम किया है व इसके पाठ से मृत्यु से भय दूर हो जाता है।

विवि के लिए सुखद अवसर: विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने स्वागत वक्तव्य देते हुए कहा कि यह एक सुखद अवसर है कि विश्वविद्यालय में ऐसे उच्च कोटि के साहित्य के मर्मज्ञ और ज्ञान प्रदान करने वाले सत्पुरुष का आगमन हुआ है। महामनीषी, दानवीर डा. गौर द्वारा स्थापित शिक्षा के इस मंदिर में ज्ञान के शलाका पुरुष की उपस्थिति से विश्वविद्यालय ध्येय वाक्य असतो मा सद्गमय की दिशा में बढ़ेगा।

आयोजन

- डा. गौर केंद्रीय विवि द्वारा आयोजित अद्वैत उत्सव में दिया व्याख्यान
- यडतोरे योगानंदेश्वर सरस्वती मठ, कृष्णाराजनगर, मैसूर के हैं महास्वामी

अद्वैत मत या धर्म सम्प्रदाय नहीं, भारतीय संस्कृति का मूल है: श्री श्री महास्वामी

विवि के पतंजलि भवन में हुआ व्याख्यान कार्यक्रम

जागरण न्यूज, सागर

आमतौर पर लोग यह मानते हैं कि अद्वैत एक अलग धर्म या सम्प्रदाय का नाम है। जबकि वास्तविकता यह है कि अनेक ज्ञान परम्पराओं की भांति यह भी एक ज्ञान परम्परा है जिसका अर्थ है सुख। आचार्य शंकर ने अद्वैत वेदान्त दर्शन के माध्यम से लोक कल्याण एवं सुख का प्रबोधन किया। उनका सिद्धांत या विचार इस मूल प्रश्न की खोज है कि मनुष्य का जन्म सफल कैसे हो सकता है। पूर्ण सुख की प्राप्ति ही जीवन का सुफल है। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के पतंजलि भवन में यडतोरे श्री योगानन्देश्वर सरस्वती मठ, कृष्णराजनगर मैसूर के मठाधिपति श्रीश्री शंकर भारती महास्वामी जी महाराज ने व्याख्यान कार्यक्रम में रविवार को इस आशय के विचार व्यक्त किए। आचार्य शंकर द्वारा रचित महत्वपूर्ण कृतियों में से एक सौन्दर्य लहरी पर व्याख्यान देते हुए उन्होंने कहा कि प्रत्येक मनुष्य को सुख चाहिए। उन्होंने कहा कि बिना तत्वज्ञान के पूर्ण सुख की प्राप्ति नहीं हो सकती। उन्होंने आचार्य शंकर द्वारा रचित सौन्दर्यलहरी की पारायण की बात कही। उन्होंने अनेक श्लोकों का उद्धरण लेते हुए यह बताया कि इसमें भोग और मोक्ष प्राप्ति दोनों के बारे में बात कही गई है। अर्थात् सांसारिक जीवन में रहते हुए हम कैसे अपने जीवन को सार्थक बना सकते हैं और आनंद की प्राप्ति कर सकते हैं। उन्होंने विश्वविद्यालय के संस्कृत के पाठ्यक्रम में सौन्दर्यलहरी के सम्मिलित होने पर प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि समाज के हर वय के लोगों को सुख की आवश्यकता होती है। सौन्दर्यलहरी का चिंतन करने पर अद्भुत आनंद की प्राप्ति होती है। उन्होंने इसमें बताये गए श्रीविद्या तत्व के बारे में भी विस्तारपूर्वक बताया और कहा कि इस तरह के ग्रन्थ प्रस्तुत करके आचार्य शंकर ने पूरी मानव जाति पर उपकार करने का काम किया है। इसके पाठ से मृत्यु से भय दूर हो जाता है। देवों के जैसा ही एकात्म भाव विकसित होता है और मनुष्य का कल्याण संभव होता है।

दुष्कर्मों का करें त्याग

उन्होंने प्रश्नोत्तरी के रूप में उनकी पुस्तक विवेकदीपनी के कई सन्दर्भों के माध्यम से यह बताया कि मनुष्य को अपने जीवन में गुरुवचन को सर्वोपरि रखना चाहिए। दुष्कर्मों का त्याग करना चाहिए और मित्र ऐसे बनाने चाहिए जो बुरे कार्यों में संलग्न होने से बचाएं। उन्होंने कहा कि आचार शंकर के विचार हमें सत्कर्मों को करने और एक अच्छे समाज निर्माण की प्रेरणा देते हैं। उन्होंने दो वर्ष पूर्व विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित अद्वैत उत्सव की भी प्रशंसा की और कहा कि आचार्य शंकर के वेदान्त पर शोध और अध्ययन देश के कई हिस्सों में किया जा रहा है और कई शोध केंद्र भी बनाए जाने की योजना चल रही है। विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने स्वागत वक्तव्य देते हुए कहा कि यह एक सुखद अवसर है कि विश्वविद्यालय में ऐसे उच्च कोटि के साहित्य के मर्मज्ञ और ज्ञान प्रदान करने वाले सत्पुरुष का आगमन हुआ है। महामनीषी, दानवीर डॉ. गौर द्वारा स्थापित शिक्षा के इस मंदिर में ज्ञान के शलाका पुरुष की उपस्थिति से विश्वविद्यालय ध्येय वाक्य असतो मां सद्गमय की दिशा में बढ़ेगा। कार्यक्रम में स्वामी जी का परिचय डॉ. किरण आर्या ने प्रस्तुत किया। संचालन डॉ. शशि कुमार सिंह ने किया। संस्कृत में हुए व्याख्यान का त्वरित अनुवाद डॉ. नौनिहाल गौतम ने किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी, विद्यार्थी, सागर शहर के विभिन्न सांस्कृतिक और आध्यात्मिक संगठनों के सदस्य, गायत्री पीठ के सदस्य एवं नागरिकगण उपस्थित थे। आयोजन में जन अभियान परिषद के सदस्यों ने महती भूमिका निभाई।

बिना तत्व ज्ञान के पूर्ण सुख की प्राप्ति नहीं हो सकती है

नवभारत न्यूज

सागर 13 फरवरी. यडतोरे योगानन्देश्वर सरस्वती मठ, कृष्णाराजनगर, मैसूर के मठाधिपति शंकर भारती महास्वामी महाराज ने आचार्य शंकर द्वारा रचित महत्वपूर्ण कृतियों में से एक सौन्दर्य लहरी पर व्याख्यान देते हुए कहा कि आमतौर लोग यह मानते हैं कि अद्वैत एक अलग धर्म या सम्प्रदाय का नाम है जबकि वास्तविकता यह है कि अनेक ज्ञान परम्पराओं की भांति यह भी एक ज्ञान परम्परा है.

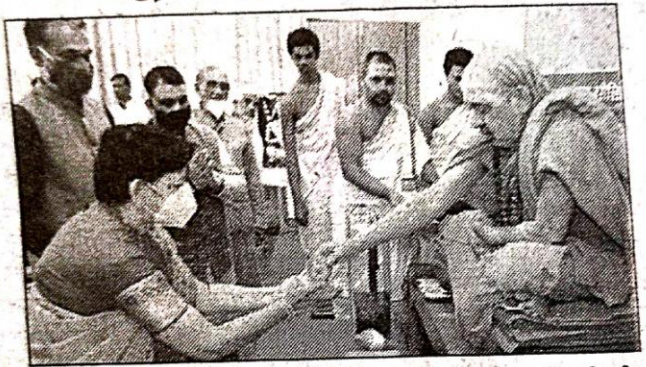

उन्होंने कहा कि जिसका अर्थ है सुख आचार्य शंकर ने अद्वैत वेदान्त दर्शन के माध्यम से लोक कल्याण एवं सुख का प्रबोधन किया. उनका सिद्धांत या विचार इस मूल प्रश्न की खोज है कि मनुष्य का जन्म सफल कैसे हो सकता है, पूर्ण सुख की प्राप्ति ही जीवन का सुफल है, प्रत्येक मनुष्य को सुख चाहिए. उन्होंने कहा कि बिना तत्वज्ञान के पूर्ण सुख की प्राप्ति नहीं हो सकती. उन्होंने आचार्य शंकर द्वारा रचित सौन्दर्यलहरी की पारायण की बात कही. उन्होंने कहा कि समाज के हर वय के लोगों को सुख की आवश्यकता होती है. सौन्दर्यलहरी का चिंतन करने पर अद्भुत आनंद की प्राप्ति होती है.विवि की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने स्वागत भाषण दिया. कार्यक्रम में स्वामी जी का परिचय डॉ किरण आर्या ने प्रस्तुत किया.

संचालन डॉ. शशि कुमार सिंह ने किया. संस्कृत में हुए व्याख्यान का त्वरित अनुवाद डॉ. नौनिहाल गौतम ने किया. आभार वक्तव्य कुलसचिव संतोष सोहगौरा ने किया.

अद्वैत मत या धर्म सम्प्रदाय नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति का मूल है: श्री शंकर भारती

सागर | डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के पतंजलि भवन में रविवार को यडतोरे श्री योगानन्देश्वर सरस्वती मठ के मठाधिपति श्री श्री शंकर भारती महास्वामी महाराज का व्याख्यान हुआ। इस दौरान आचार्य शंकर द्वारा रचित महत्वपूर्ण कृतियों में से एक सौन्दर्य लहरी पर उन्होंने व्याख्यान देते हुए उन्होंने कहा कि आमतौर लोग यह मानते हैं कि अद्वैत एक अलग धर्म या सम्प्रदाय का नाम है जबकि वास्तविकता यह है कि अनेक ज्ञान परम्पराओं की भांति यह भी एक ज्ञान परम्परा है। इसका अर्थ है सुख। आचार्य शंकर ने अद्वैत वेदान्त दर्शन के माध्यम से लोक कल्याण एवं सुख का प्रबोधन किया। उनका सिद्धांत या विचार इस मूल प्रश्न की खोज है कि मनुष्य का जन्म सफल कैसे हो सकता है। पूर्ण सुख की प्राप्ति ही जीवन का सुफल है। प्रत्येक मनुष्य को सुख चाहिए। उन्होंने विश्वविद्यालय के संस्कृत के पाठ्यक्रम में सौन्दर्यलहरी के सम्मिलित होने पर प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने दो वर्ष पूर्व विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित अद्वैत उत्सव की भी प्रशंसा की और कहा कि आचार्य शंकर के वेदान्त पर शोध और अध्ययन देश के कई हिस्सों में किया जा रहा है और कई शोध केंद्र भी बनाए जाने की योजना चल रही है। कार्यक्रम में स्वामी जी का परिचय डॉ. किरण आर्या ने प्रस्तुत किया। संचालन डॉ. शशि कुमार सिंह ने किया।

एरण को विश्व धरोहर पुरास्थल की सूची में शामिल करने की आवश्यकता : कुलपति गुप्ता

सागर, देशबन्धु। आजादी की 75 वीं वर्षगांठ के अवसर पर भारत सरकार द्वारा आज़ादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, के पुरातत्व संग्रहालय में गुरूवार को बुन्देलखण्ड की सांस्कृतिक विरासत पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन आरंभ हुआ। संगोष्ठी का आरंभ पं. राजा मिश्रा द्वारा स्वस्तिक वाचन, सरस्वती वंदना एवं अतिथियों के द्वारा दीप प्रज्वलन किया गया। संगोष्ठी के आरम्भ में विश्वविद्यालय के संस्थापक डॉ. हरीसिंह गौर एवं विभाग के संस्थापक प्रो. केडी वाजपेयी की आवक्ष मूर्तियों पर माल्यार्पण किया गया। इस संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता कर रही कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता द्वारा बुंदेलखण्ड की गौरवमयी विरासत के विषय में जानकारी देते हुए कहा कि 'जिस प्रकार मनुष्य के शरीर का केन्द्र बिन्दु उसका हृदय होता है। उसी प्रकार भारत का हृदय स्थल बुन्देलखण्ड है। अपने वक्तव्य में कुलपति द्वारा बुन्देलखण्ड के प्रमुख पुरास्थल एरण को वैश्विक पटल पर प्रदर्शित करने के लिए उसके संरक्षण एवं संवर्धन सहित बुन्देलखण्ड के प्रमुख पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने के लिए भी प्रयास करने की बात कही गयी। संगोष्ठी के मुख्य अतिथि पद्मश्री राम सहाय पाण्डेय द्वारा अपने वक्तव्य में यह कहा गया कि हम वर्ष 1975 से विश्वविद्यालय से जुड़े हुए हैं।

ऐसे कई अवसर आये जिन में मुझे अपनी विरासत राई नृत्य के संरक्षण, संवर्धन एवं विकास के लिए विश्वविद्यालय के कार्यक्रमों में उपस्थित होने का अवसर प्राप्त हुआ। अंत में उन्होंने अपने मिले पद्मश्री सम्मान को व्यक्तिगत सम्मान न मानते हुए समूचे बुन्देलखण्ड का सम्मान माना है। संगोष्ठी का बीज वक्तव्य इतिहास विभाग के अध्यक्ष प्रो. बीके श्रीवास्तव द्वारा प्रस्तुत किया गया इन्होंने अपने वक्तव्य में भारतवर्ष में पाषाणकाल से लेकर आधुनिक काल तक के इतिहास में बुन्देलखण्ड की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला। साथ ही बुन्देलखण्ड के विरासत स्वरूप अनेक घटनाक्रमों एवं स्थलों की महत्ता को भी बतलाया गया। इस संगोष्ठी के प्रायोजक भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद नई दिल्ली एवं भारतीय स्टेट बैंक, विश्वविद्यालय शाखा, सागर हैं। इस संगोष्ठी में मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान अध्ययनशाला के अधिष्ठाता प्रो. एडी शर्मा, प्रो. एपी दुबे, प्रो. वीआई गुरु, प्रो. सरोज गुप्ता, प्रो. नवीन गिडियन. प्रो. अशोक अहिरवार, प्रो. ममता पटेल, डॉ. शशि सिंह, डॉ. कृष्णा राव, डॉ. पंकज सिंह, डॉ. संजय बरोलिया, डॉ. विश्वजीत परमार, डॉ. दीपशिखा परमार, डॉ. केके त्रिपाठी, डॉ. लक्ष्मी पाण्डेय एवं प्रदीप शुक्ला के साथ-साथ बड़ी संख्या में शोधार्थी एवं विद्यार्थीगण देश के विभिन्न राज्यों से उपस्थित रहे।

जानकारियों से अवगत कराया।

अतिक्रमणरोधी दस्ता मौजूद रहा।

ऐरण को विश्व धरोहर पुरास्थल की सूची में शामिल करने की आवश्यकताः कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता

दो दिवसीय संगोष्ठी में संस्कृति और संरक्षण पर होगी चर्चा

जागरण न्यूज, सागर

आजादी की 75वीं वर्षगांठ के अवसर पर भारत सरकार द्वारा आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के पुरातत्व संग्रहालय में गुरुवार को बुन्देलखण्ड की सांस्कृतिक विरासत पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन आरम्भ हुआ। संगोष्ठी का आरंभ पं. राजा मिश्रा द्वारा स्वस्तिक वाचन सरस्वती वंदना एवं अतिथियों के द्वारा दीप प्रज्वलन किया गया। संगोष्ठी के आरंभ में विश्वविद्यालय के संस्थापक डॉ. हरीसिंह गौर एवं विभाग के संस्थापक प्रो. केडी वाजपेयी की आवक्ष मूर्तियों पर माल्यार्पण किया गया। इस संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता कर रही कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता द्वारा बुंदेलखण्ड की गौरवमयी विरासत के विषय में जानकारी देते हुए कहा कि जिस प्रकार मनुष्य के शरीर का केन्द्र बिन्दु उसका हृदय होता है। उसी प्रकार भारत का हृदय स्थल बुन्देलखण्ड है। अपने वक्तव्य में कुलपति द्वारा बुन्देलखण्ड के प्रमुख पुरास्थल एरण को वैश्विक पटल पर प्रदर्शित करने के लिए उसके संरक्षण एवं संवर्धन सहित बुन्देलखण्ड के प्रमुख पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने के लिए भी प्रयास करने की बात कही गयी। संगोष्ठी के मुख्य अतिथि पद्मश्री राम सहाय पाण्डेय ने कहा गया कि हम वर्ष 1975 से विश्वविद्यालय से जुड़े हुए हैं। ऐसे कई अवसर आये जिन में मुझे अपनी विरासत राई नृत्य के संरक्षण, संवर्धन एवं विकास के लिए विश्वविद्यालय के कार्यक्रमों में उपस्थित होने का अवसर प्राप्त हुआ। अंत में उन्होंने अपने मिले पद्मश्री सम्मान को व्यक्तिगत सम्मान न मानते हुए समूचे बुन्देलखण्ड का सम्मान माना है। संगोष्ठी का बीज वक्तव्य इतिहास विभाग के अध्यक्ष प्रो. बीके श्रीवास्तव द्वारा प्रस्तुत किया गया। संगोष्ठी में अतिथियों का स्वागत संयोजक डॉ. आरपी सिंह द्वारा किया गया। इस संगोष्ठी पर प्रकाश डालते हुए विभागाध्यक्ष एवं संगोष्ठी निदेशक प्रो. नागेश दुबे द्वारा बुन्देलखण्ड की सांस्कृतिक विरासत पर नवीन तथ्यों के प्रकाश में आने की बात कही गयी। संगोष्ठी का संचालन संगोष्ठी आयोजन सचिव डॉ. सुरेन्द्र कुमार यादव द्वारा किया गया एवं संगोष्ठी के सह सचिव डॉ. सुल्तान सलाहुद्दीन ने अतिथियों का स्वागत किया। संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र के अंत में विभागाध्यक्ष द्वारा समस्त अतिथियों का आभार प्रकट किया गया।

अमृत महोत्सव विवि में बुंदेलखंड की सांस्कृतिक विरासत' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया

विश्व धरोहर पुरास्थल की सूची में शामिल किया जाए एरण

सागर(नवदुनिया प्रतिनिधि)। आदी के 75 वीं वर्षगांठ के अवसर पर भारत सरकार द्वारा आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, डा. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के पुरातत्त्व संग्रहालय में गुरूवार को बुंदेलखंड की सांस्कृतिक विरासत' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने बुंदेलखंड की गौरवमयी विरासत के संबंध में कहा कि जिस प्रकार मनुष्य के शरीर का केन्द्र बिन्दु उसका हृदय होता है। उसी प्रकार भारत का हृदय स्थल बुंदेलखंड है। बुंदेलखंड के प्रमुख पुरास्थल एरण को वैश्विक पटल पर प्रदर्शित करने के लिए उसके संरक्षण एवं बुंदेलखंड के प्रमुख पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने की आवश्यकता है। संगोष्ठी के मुख्य अतिथि पद्मश्री से

कार्यक्रम के दौरान पद्मश्री से सम्मानित डा. रामसहाय पांडे का सम्मान करती हुई कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता। ● नवदुनिया

सम्मानित राम सहाय पाण्डेय ने कहा कि हम वर्ष 1975 से विश्वविद्यालय से जुड़े हुए हैं। ऐसे कई अवसर आए जिन में मुझे अपनी विरासत राई नृत्य के संरक्षण, संवर्धन एवं विकास के लिए विश्वविद्यालय के कार्यक्रमों में उपस्थित होने का अवसर प्राप्त हुआ। अंत में उन्होंने अपने मिले पद्मश्री सम्मान को व्यक्तिगत सम्मान न मानते हुए समूचे बुन्देलखण्ड का सम्मान माना है।

पाषाण से आधुनिक काल के इतिहास पर डाला प्रकाश : संगोष्ठी का बीज वक्तव्य इतिहास विभाग के अध्यक्ष प्रो. बीके श्रीवास्तव द्वारा प्रस्तुत किया गया। इन्होंने अपने वक्तव्य में भारतवर्ष में पाषाणकाल से लेकर आधुनिक काल तक के इतिहास में बुन्देलखण्ड की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला। साथ ही बुंदेलखंड के विरासत स्वरूप अनेक घटनाक्रमों एवं स्थलों की महत्ता बताई।संगोष्ठी में अतिथियों का स्वागत संयोजक डा. आरपी सिंह ने किया। विभागाध्यक्ष एवं संगोष्ठी निदेशक प्रो. नागेश दुबे द्वारा बुन्देलखण्ड की सांस्कृतिक विरासत पर नवीन तथ्यों के प्रकाश में आने की बात कही। संगोष्ठी का संचालन सचिव डा. सुरेन्द्र कुमार यादव ने किया एवं आभार सह सचिव डा. सुल्तान सलाहुद्दीन ने अतिथियों का स्वागत किया।

बुंदेलखंड के लोकगीतों पर शोध पत्र प्रस्तुत : उद्घाटन सत्र के बाद प्रथम अकादमिक सत्र का आरम्भ हुआ जिसकी अध्यक्षता डा. शरद सिंह एवं हरगोविन्द विश्व ने किया। डा. संतोष तिवारी ने दमोह के शैलचित्र, अभिषेक खरे द्वारा बुन्देलखण्ड की सांस्कृतिक विरासत में लोक गीतों का योगदान, डा. कविता शुक्ल द्वारा बुन्देलखण्ड के ताल तत्वज्ञ, डा. उमा पाराशर द्वारा झांसी के संग्रहालय में संरक्षित कलाशिल्प व सत्र अंत में अंजली पाण्डेय द्वारा बुन्देलखण्ड के लोकगीतों पर शोध पत्र प्रस्तुत किया गया। संगोष्ठी में मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान अध्ययनशाला के अधिष्ठाता प्रो. एडी शर्मा, प्रो. एपी दुबे, प्रो. वीआई गुरू, प्रो. सरोज गुप्ता, प्रो. नवीन गिडियन. प्रो. अशोक अहिरवार, प्रो. ममता पटेल, डा. शशि सिंह उपस्थित रहे।

मंथन • विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास विभाग बुंदेलखंड की सांस्कृतिक विरासत विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी शुरू, कुलपति बोलीं-

ऐरण को विश्व धरोहर पुरास्थल की सूची में शामिल करने की जरूरत

भास्कर संवाददाता | सागर

जिस प्रकार मनुष्य के शरीर का केन्द्र बिन्दु उसका हृदय होता है। उसी प्रकार भारत का हृदय स्थल बुंदेलखंड है। बुंदेलखंड के प्रमुख पुरास्थल एरण को वैश्विक पटल पर प्रदर्शित करने के लिए उसके संरक्षण एवं संवर्धन सहित बुंदेलखंड के प्रमुख पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने के लिए भी प्रयास करने की जरूरत है। यह बात डॉ. हरीसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कही। वे गुरुवार को विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग में बुंदेलखंड की सांस्कृतिक विरासत विषय पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन कर रही थीं। मुख्य अतिथि पद्मश्री रामसहाय पाण्डेय ने कहा कि हम वर्ष 1975 से विश्वविद्यालय से जुड़े हुए हैं। ऐसे कई अवसर आए जिनमें मुझे अपनी विरासत राई नृत्य के संरक्षण, संवर्धन एवं विकास के लिए विश्वविद्यालय के कार्यक्रमों में उपस्थित होने का अवसर मिला। उन्होंने अपने पद्मश्री सम्मान को व्यक्तिगत सम्मान न मानते हुए समूचे बुंदेलखंड का सम्मान बताया। इतिहास विभाग के अध्यक्ष प्रो. बीके श्रीवास्तव ने भारतवर्ष में पाषाणकाल से लेकर आधुनिक काल तक के इतिहास में बुंदेलखंड की भूमिका पर प्रकाश डाला। साथ ही बुंदेलखंड के विरासत स्वरूप अनेक घटनाक्रमों एवं स्थलों की महत्ता बताई। विभागाध्यक्ष एवं संगोष्ठी निदेशक प्रो. नागेश दुबे ने बुंदेलखंड की सांस्कृतिक विरासत पर नवीन तथ्यों के प्रकाश में आने की बात कही। संचालन आयोजन सचिव डॉ. सुरेन्द्र कुमार यादव ने किया। सहसचिव डॉ. सुल्तान सलाहुद्दीन ने अतिथियों का स्वागत किया।

सागर . संगोष्ठी के दौरान पद्मश्री रामसहाय पांडे का सम्मान किया गया।

दमोह के शैलचित्रों से लेकर झांसी में संरक्षित कला शिल्प पर प्रस्तुत किए शोधपत्र

अकादमिक सत्र की अध्यक्षता डॉ. शरद सिंह एवं हरगोविंद विश्व ने की। इसमें डॉ. संतोष तिवारी द्वारा दमोह के शैलचित्र, अभिषेक खरे द्वारा बुंदेलखंड की सांस्कृतिक विरासत में लोक गीतों का योगदान डॉ. कविता शुक्ल द्वारा बुंदेलखंड के ताल तत्वज्ञ, डॉ. उमा पाराशर द्वारा झांसी के संग्रहालय में संरक्षित कला शिल्प तथा अंजली पाण्डेय द्वारा बुंदेलखंड के लोकगीतों पर शोध पत्र प्रस्तुत किया गया। संगोष्ठी में मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान अध्ययनशाला के अधिष्ठाता प्रो. एडी शर्मा, प्रो. एपी दुबे, प्रो. वीआई गुरू, प्रो. सरोज गुप्ता, प्रो. नवीन गिडियन. प्रो. अशोक अहिरवार, प्रो. ममता पटेल, डॉ. शशि सिंह, डॉ. कृष्णा राव, डॉ. पंकज सिंह, डॉ. संजय बरोलिया, डॉ. विश्वजीत परमार, डॉ. दीपशिखा परमार, डॉ. केके त्रिपाठी, डॉ. लक्ष्मी पाण्डेय एवं प्रदीप शुक्ला के साथ-साथ बड़ी संख्या में शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित थे।

आयोजन । दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी प्रारंभ, कुलपति ने किया उद्घाटन

एरण को विश्व धरोहर पुरास्थल की सूची में शामिल करने की आवश्यकताः नीलिमा

सागर, आचरण संवाददाता।

आज़ादी के 75 वीं वर्षगाँठ के अवसर पर भारत सरकार द्वारा आज़ादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.), के पुरातत्त्व संग्रहालय में आज दिनांक 17 फरवरी, 2022 को 'बुन्देलखण्ड की सांस्कृतिक विरासत' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन आरम्भ हुआ। संगोष्ठी का आरम्भ पण्डित राजा मिश्रा द्वारा स्वस्तिक वाचन ,सरस्वती वंदना एवं अतिथियों के द्वारा दीप प्रज्वलन किया गया। संगोष्ठी के आरम्भ में विश्वविद्यालय के संस्थापक डॉ. हरीसिंह गौर एवं विभाग के संस्थापक प्रो. के. डी. वाजपेयी की आवक्ष मूर्तियों पर माल्यार्पण किया गया।

इस संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता कर रही कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता द्वारा बुंदेलखण्ड की गौरवमयी विरासत के विषय में जानकारी देते हुए कहा कि 'जिस प्रकार मनुष्य के शरीर का केन्द्र बिन्दु उसका हृदय होता है। उसी प्रकार भारत का हृदय स्थल बुन्देलखण्ड है। अपने वक्तव्य में कुलपति महोदया द्वारा बुन्देलखण्ड के प्रमुख पुरास्थल एरण को वैश्विक पटल पर प्रदर्शित करने के लिए उसके संरक्षण एवं संवर्धन सहित बुन्देलखण्ड के प्रमुख पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने के लिए भी प्रयास करने की बात कही गयी। संगोष्ठी के मुख्य अतिथि पद्मश्री श्री राम सहाय पाण्डेय द्वारा अपने वक्तव्य में यह कहा गया कि हम वर्ष 1975 से विश्वविद्यालय से जुड़े हुए हैं। ऐसे कई अवसर आये जिन में मुझे अपनी विरासत राई नृत्य के संरक्षण, संवर्धन एवं विकास के लिए विश्वविद्यालय के कार्यक्रमों में उपस्थित होने का अवसर प्राप्त हुआ। अंत में उन्होंने अपने मिले पद्मश्री सम्मान को व्यक्तिगत सम्मान न मानते हुए समूचे बुन्देलखण्ड का सम्मान माना है। संगोष्ठी का बीज वक्तव्य इतिहास विभाग के अध्यक्ष प्रो. बी. के. श्रीवास्तव द्वारा प्रस्तुत किया गया इन्होंने अपने वक्तव्य में भारतवर्ष में पाषाणकाल से लेकर आधुनिक काल तक के इतिहास में बुन्देलखण्ड की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला। साथ ही बुन्देलखण्ड के विरासत स्वरूप अनेक घटनाक्रमों एवं स्थलों की महत्ता को भी बतलाया गया।

संगोष्ठी में अतिथियों का स्वागत संयोजक डॉ. आर. पी. सिंह द्वारा किया गया। इस संगोष्ठी पर प्रकाश डालते हुए विभागाध्यक्ष एवं संगोष्ठी निदेशक प्रो. नागेश दुबे द्वारा बुन्देलखण्ड की सांस्कृतिक विरासत पर नवीन तथ्यों के प्रकाश में आने की बात कही गयी। संगोष्ठी का संचालन संगोष्ठी आयोजन सचिव डॉ. सुरेन्द्र कुमार यादव द्वारा किया गया एवं संगोष्ठी के सह सचिव डॉ. सुल्तान सलाहुद्दीन ने अतिथियों का स्वागत किया।

संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र के अंत में विभागाध्यक्ष द्वारा समस्त अतिथियों का आभार प्रकट किया गया। उद्घाटन सत्र के पश्चात प्रथम अकादमिक सत्र का आरम्भ हुआ जिसकी अध्यक्षता डॉ. शरद सिंह एवं हरगोविन्द विश्व ने किया; जिसमें डॉ. संतोष तिवारी द्वारा दमोह के शैलचित्र, अभिषेक खरे द्वारा बुन्देलखण्ड की सांस्कृतिक विरासत में लोक गीतों का योगदान डॉ. कविता शुक्ल द्वारा बुन्देलखण्ड के ताल तत्वज्ञ, डॉ. उमा पाराशर द्वारा झाँसी के संग्रहालय में संरक्षित कलाशिल्प तथा सत्र अंत में अंजली पाण्डेय द्वारा बुन्देलखण्ड के लोकगीतों पर शोध पत्र प्रस्तुत किया गया। सत्र की अध्यक्षता कर रहे डॉ. शरद सिंह एवं हरगोविन्द विश्व द्वारा बुन्देलखण्ड की विरासत से संबंधित अपने अनुभव को साझा किया। इस संगोष्ठी के प्रायोजक भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली एवं भारतीय स्टेट बैंक, विश्वविद्यालय शाखा, सागर हैं। इस संगोष्ठी में मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान अध्ययनशाला के अधिष्ठाता प्रो. ए. डी. शर्मा, प्रो. ए. पी. दुबे, प्रो. वी. आई. गुरू, प्रो. सरोज गुप्ता, प्रो. नवीन गिडियन. प्रो. अशोक अहिरवार, प्रो. ममता पटेल, डॉ. शशि सिंह, डॉ. कृष्णा राव, डॉ. पंकज सिंह, डॉ. संजय बरोलिया, डॉ. विश्वजीत परमार, डॉ. दीपशिखा परमार, डॉ. के. के. त्रिपाठी, डॉ. लक्ष्मी पाण्डेय एवं प्रदीप शुक्ला के साथ-साथ बड़ी संख्या में शोधार्थी एवं विद्यार्थीगण देश के विभिन्न राज्यों से उपस्थित रहे।

डॉ. संजीव सराफ को मिलेगा ज्ञानोदय पुरस्कार, 21 हजार नकद मिलेंगे

सागर | देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर के मान्य शोध केंद्र कुंदकुंद ज्ञानपीठ के सहयोग से डॉ. सूरजमल बोबरा द्वारा स्थापित ज्ञानोदय पुरस्कार की घोषणा हुई। निर्णायक मंडल की बैठक इंदौर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. रेणु जैन की अध्यक्षता में हुई। जिसमें सर्वसम्मत अनुशंसा के आधार पर वर्ष 2021 का ज्ञानोदय पुरस्कार डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के पूर्व छात्र और काशी हिंदू विश्वविद्यालय के डिप्टी लाइब्रेरियन डॉ. संजीव सराफ को देने का निर्णय लिया गया।

यह पुरस्कार वर्ष 1998 से प्रतिवर्ष भारतीय संस्कृति के संवर्द्धन मे अपना योगदान देने वाले व्यक्ति को दिया जाता है। डॉ. सराफ द्वारा पुस्तकालयों के माध्यम से संस्कृति एवं पांडुलिपियों के डिजीटल संरक्षण के लिए सेवाओं को दृष्टिगत रखते हुए ज्ञानोदय पुरस्कार प्रदान किया जाएगा। पुरस्कार के तहत 21 हजार रुपए, शॉल एवं श्रीफल से सम्मानित किया जाएगा।

डॉ. संजीव सराफ को वर्ष 2021 का ज्ञानोदय पुरस्कार

जागरण, सागर। मकरोनिया निवासी डॉ. संजीव सराफ को देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर के मान्य शोध केन्द्र कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ के सहयोग से डॉ. सूरजमल बोबरा द्वारा स्थापित ज्ञानोदय पुरस्कार देने की घोषणा की गई है। निर्णायक मण्डल की बैठक इंदौर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो.रेणु जैन की अध्यक्षता में संपन्न हुई। जिसमें सर्वसम्मत अनुशंसा के आधार पर वर्ष 2021 का ज्ञानोदय पुरस्कार डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के पूर्व छात्र और काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के वरिष्ठ डिप्टी लाइब्रेरियन डॉ. संजीव सराफ को देने का निर्णय लिया गया। दिवंगत डॉ.विमल कुमार जैन के पुत्र डॉ. संजीव सराफ द्वारा पुस्तकालयों के माध्यम से संस्कृति एवं पांडुलिपियों के डिजीटल संरक्षण हेतु सेवाओं को दृष्टिगत रखते हुए ज्ञानोदय पुरस्कार प्रदान किया जाएगा। पुरस्कार के तहत 21 हजार रुपए की राशि, शॉल एवं श्रीफल से सम्मानित किया जायेगा। पुस्तकालय जगत में डॉ. संजीव सराफ को प्रतिष्ठित ज्ञानोदय पुरस्कार की घोषणा से हर्ष की लहर है। यह पुरस्कार वर्ष 1998 से प्रतिवर्ष भारतीय संस्कृति के संवर्द्धन में अपना योगदान देने वाले व्यक्ति को दिया जाता है।

डॉ संजीव सराफ को ज्ञानोदय पुरूस्कार

सागर (आरएनएन)। सागर निवासी डॉ संजीव सराफको देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर के मान्य शोध केन्द्र कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ के सहयोग से डॉ सूरजमल बोबरा द्वारा स्थापित ज्ञानोदय पुरूस्कार देने की घोषणा की गई। निर्णायक मण्डल की बैठक इंदौर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो रेणु जैन की अध्यक्षता में संपन्न हुई। जिसमें सर्वसम्मत अनुशंसा के आधार पर वर्ष 2021 का ज्ञानोदय पुरूस्कार डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के पूर्व छात्र और काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के वरिष्ठ डिप्टी लाइब्रेरियन डॉ संजीव सराफको देने का निर्णय लिया गया। डॉ सराफद्वारा पुस्तकालयों के माध्यम से संस्कृति एवं पांडुलिपियों के डिजीटल संरक्षण हेतु सेवाओं को दृष्टिगत रखते हुए ज्ञानोदय पुरूस्कार प्रदान किया जायेगा। पुरूस्कार के तहत इक्कीस हजार रूपये की राशि, शाल एवं श्रीफल से सम्मानित किया जायेगा। पुस्तकालय जगत में डॉ संजीव सराफको प्रतिष्ठित ज्ञानोदय पुरूस्कार की घोषणा से हर्ष की लहर है। यह पुरूस्कार वर्ष 1998 से प्रतिवर्ष भारतीय संस्कृति क्रे संवर्द्धन मे अपना योगदान देने वाले व्यक्ति को दिया जाता है।

डॉ. संजीव सराफ को ज्ञानोदय पुरूस्कार

सागर, आचरण। सागर निवासी डॉ संजीव सराफ को देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर के मान्य शोध केन्द्र कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ के सहयोग से डॉ. सूरजमल बोबरा द्वारा स्थापित ज्ञानोदय पुरस्कार देने की घोषणा की गई। निर्णायक मण्डल की बैठक इंदौर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. रेणु जैन की अध्यक्षता में संपन्न हुई। जिसमें सर्वसम्मत अनुशंसा के आधार पर वर्ष 2021 का ज्ञानोदय पुरस्कार डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के पूर्व छात्र और काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के वरिष्ठ डिप्टी लाइब्रेरियन डॉ. संजीव सराफ को देने का निर्णय लिया गया। डॉ. संजीव सराफ द्वारा पुस्तकालयों के माध्यम से संस्कृति एवं पांडुलिपियों के डिजीटल संरक्षण हेतु सेवाओं को दृष्टिगत रखते हुए ज्ञानोदय पुरूस्कार प्रदान किया जायेगा। पुरस्कार के तहत इक्कीस हजार रुपये की राशि, शाल एवं श्रीफल से सम्मानित किया जायेगा। पुस्तकालय जगत में डा0 संजीव सराफ को प्रतिष्ठित ज्ञानोदय पुरूस्कार की घोषणा से हर्ष की लहर है। यह पुरस्कार वर्ष 1998 से प्रतिवर्ष भारतीय संस्कृति के संवर्द्धन मे अपना योगदान देने वाले व्यक्ति को दिया जाता है।

र संभाग द्वारा स्थापित किया गया।

है तब ही ठेकेदारों को लाइसेंस जारी होगा।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति और शैक्षिक उन्नयन से राष्ट्रीय विकास के नये आयाम स्थापित किये जा सकते हैं: प्रो राजपूत

सागर, आचरण संवाददाता।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा में गुणवत्ता के लिए आवश्यक आधारभूत तत्वों पर पर्याप्त ध्यान दिया गया है। शिक्षकों में व्यावसायिक कौशल उन्नयन और आदर्श शिक्षकीय व्यक्तित्व हेतु जरूरी चरणों को भी महत्वपूर्ण स्थान मिला है। बदलते परिवेश में शिक्षक-वर्ग की तदनुरूप निपुणता विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों और विद्यालयों के शैक्षिक परिवेश की समृद्धि के लिए अत्यंत आवश्यक है। शिक्षकों में विद्यार्थियों की तरह सीखने की ललक, कुछ नया करने का उत्साह और निरंतर प्रगतिपथ पर आगे बढ़ते रहने की व्यवस्थित कार्ययोजना होनी चाहिए। ये विचार दिये प्रो दिवाकर सिंह राजपूत ने फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम में मुख्य वक्ता के रूप में उदबोधन देते हुए।

डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर मध्यप्रदेश के समाजशास्त्र एवं समाजकार्य विभाग में पदस्थ प्रोफ़ेसर दिवाकर सिंह राजपूत ने कहा कि अध्ययन, अध्यापन और अनुसंधान के लिए सेवारत शिक्षकों से शैक्षणिक संस्थानों और समाज को बहुत अपेक्षायें होती हैं। राष्ट्र निर्माण के लिए युवाओं के आदर्श व्यक्तित्व निर्माण की दिशा में शिक्षक हमेशा प्रेरणा और गति प्रदान करने का काम करते हैं। इसके लिए स्वयं का व्यक्तित्व विकास और आदर्श शोध- अनुशासन पहले चरण के महत्वपूर्ण अंश कहे जा सकते हैं। राम-कृष्ण धर्मार्थ फाउण्डेशन विश्वविद्यालय (आर के डी एफ यूनिवर्सिटी) भोपाल द्वारा आयोजित ऑनलाइन फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम के प्रथम दिवस मुख्य वक्ता के रूप प्रो दिवाकर सिंह राजपूत ने विशेष रूप से आदर्श व्यक्तित्व निर्माण, शैक्षणिक गुणवत्ता, वैश्विक प्रतिस्पर्धा, संसाधन प्रबंधन, राष्ट्रीय विकास एवं आदर्श सामाजिक साँस्कृतिक अकादमिक परिवेश पर केन्द्रित बिन्दुओं पर प्रकाश डाला। विषय विशेषज्ञ के रूप में व्याख्यान देते हुए कहा कि शिक्षा एक साँस्कृतिक साधना, सामाजिक दायित्व और एक वैज्ञानिक कदम है जो कल्याण और विकास के लिए सहयोगी भूमिका का निर्वाह करती है।

इसके लिए शिक्षकों की भूमिका नैतिक रूप से बहुत महत्वपूर्ण हो जाती है। समय और देश की जरूरतों को बारीकी से समझने की क्षमता विद्यार्थियों में जागृत की जा सके, यह शिक्षकों की नैतिक जिम्मेदारी भी होती है। प्रो राजपूत ने कहा कि राष्ट्र निर्माण के लिए सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण भूमिका माता और शिक्षक की होती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में मौलिक चिंतन, मातृभाषा, पुरातन ज्ञान, कौशल उन्नयन और द्रुतगामी वैज्ञानिक सोच का समावेश किया गया है, जो वैश्विक प्रतिस्पर्धा के इस दौर में साँस्कृतिक मूल्यों के साथ शिखर पर पहुँच बनाने में सहयोगी सिद्ध हो सकता है। प्रो राजपूत ने कहा कि शिक्षक समय का पर्याय भी होता है, जो व्यक्तित्व निर्माण के साथ इतिहास गढ़ने वालों को गढ़ता है।

इसके लिए समय समय पर फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम के माध्यम से शिक्षकों में नवाचार और अकादमिक उत्साह को एक नयी दिशा व गति देने की पहल सराहनीय कदम कहा जा सकता है।

कार्यक्रम का संयोजन डॉ शरद गंगेले ने किया। अध्यक्षीय उदबोधन डॉ विनोद कृष्ण सेट्ठी ने दिया। उन्होंने कहा कि शिक्षक सदैव सीखने की प्रक्रिया से जुड़े रहते हैं। कुलपति प्रो एस के सोहानी ने शिक्षा और भाषा के महत्व पर प्रकाश डाला। ऑनलाइन फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम में देश की विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों में सेवारत सहायक प्राध्यापकों, सह-प्राध्यापकों ने सहभागिता की।

बुन्देलखण्ड जैसी विरासतें ही भारत की सांझी संस्कृति है: प्रो. ईश्वर शरण विश्वकर्मा

विश्वविद्यालय में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन

जागरण न्यूज, सागर

बुन्देलखण्ड की सांस्कृतिक विरासत विषय पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी सम्पन्न हुई। इस संगोष्ठी के समापन समारोह के मुख्य अतिथि अध्यक्ष, उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग उप्र प्रयागराज प्रो. ईश्वर शरण विश्वकर्मा थे। अपने उद्बोधन में उन्होंने बुन्देलखण्ड को भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग बताया तथा कहा कि वर्तमान समय में सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड के इतिहास के पुनर्लेखन की महती आवश्यकता है। संगोष्ठी के समापन समारोह की अध्यक्षता कर रहे प्रो. अम्बिका दत्त शर्मा द्वारा अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में यह कहा गया कि बुन्देलखण्ड वह भूमि है जिसमें प्राचीन समय से लेकर वर्तमान समय तक अनेक संस्कृतियों से संबंधित लोगों को अपने अंदर शरण दिया। साथ ही इन्होंने यह भी बतलाया कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में बुन्देलखण्ड का विशेष योगदान रहा है। जिसके उदाहरण स्वरूप झांसी की रानी एवं रतोना जैसे आंदोलन हुए। शुक्रवार को संगोष्ठी के दो तकनीकी सत्र आयोजित किए गए। द्वितीय अकादमिक सत्र की अध्यक्षता डॉ. विश्वजीत सिंह परमार एवं प्रो. केके त्रिपाठी ने की। जिसमें कन्हैया यादव द्वारा ओरछा की सांस्कृतिक विरासत, अरुण झा द्वारा ललितपुर का अप्रतिम स्थलः चांदपुर के विशेष सन्दर्भ में, सृष्टि घोष द्वारा रॉक आर्ट ऑफ खानपुर, निधि सोनी द्वारा बुन्देलखण्ड के लोकजीवन में लोक उत्सव एवं मेले, डॉ. सत्यनारायण देवलिया द्वारा बुन्देलखण्ड की वैभवशाली विरासतः बालावेहट जनश्रुतियों के आलोक में, अवधेश प्रताप सिंह तोमर द्वारा शास्त्री संगीत एवं गायन का वाचन किया। तृतीय अकादमिक सत्र की अध्यक्षता डॉ. सरोज गुप्ता एवं विनोद मिश्र ने की। जिसमें डॉ. विश्वजीत सिंह परमार द्वारा बुन्देलखण्ड की लोक संस्कृति के विविध पक्ष, डॉ. भरत कुमार शुक्ला द्वारा महाराजा छत्रसाल के गौरव का प्रतीक धुबेला संग्रहालय, शीरीन कॉमफर्ट द्वारा द अनटच्ड हेरीटेज ऑफ बुन्देलखण्ड, राजेश अहिरवार द्वारा बुन्देलखण्ड की संस्कृति में लोकपर्व सुआटा, डॉ. दीपक मोदी द्वारा बुन्देलखण्ड की सांस्कृतिक विरासत में एकता, डॉ. राहुल स्वर्णकार द्वारा बुन्देलखण्ड के संगीत में ताल वाद्य परम्परा का वाचन किया। चतुर्थ अकादमिक सत्र जिसकी अध्यक्षता प्रो. नवीन गिडियन एवं डॉ. प्रदीप शुक्ला ने की। जिसमें डॉ. गोविन्द सिंह द्वारा रहली अंचल का प्राचीन शैव मूर्तिशिल्प; डॉ. अलीम अहमद द्वारा बुंदेली कला संस्कृति वैभव के प्रचार प्रसार में जन माध्यमों की भूमिका, आकांक्षा जैन द्वारा बुन्देलखण्ड की संस्कृति संवर्धन में कान्तिकुमार जैन का योगदान, दीपशिखा सिंह के द्वारा बुन्देलखण्ड की लोकगाथाएं दिवान लल हरदौल एवं कारसदेव के विशेष संदर्भ में तथा डॉ. अर्चना द्विवेदी द्वारा बुन्देलखण्ड का स्थापत्य शिल्प का वाचन किया गया। समापन सत्र में अतिथियों का स्वागत डॉ. आरपी सिंह एवं आभार प्रो. नागेश दुबे द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन एवं संगोष्ठी का प्रतिवेदन डॉ. सुरेन्द्र कुमार यादव ने किया। इस संगोष्ठी के प्रायोजक भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद नई दिल्ली एवं भारतीय स्टेट बैंक, विश्वविद्यालय शाखा, सागर हैं। इस संगोष्ठी में प्रो. अशोक अहिरवार, डॉ. संजय कुमार, डॉ. कृष्णा राव, डॉ. पंकज सिंह, डॉ. संजय बरोलिया, डॉ. विश्वजीत परमार, डॉ. दीपशिखा सिंह परमार, डॉ. केके त्रिपाठी के साथ-साथ बड़ी संख्या में शोधार्थी एवं विद्यार्थीगण देश के विभिन्न राज्यों से उपस्थित रहे।

आयोजन । दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन

बुन्देलखण्ड जैसी विरासतें ही भारत की साझी संस्कृति है

सागर, आचरण संवाददाता।

'बुन्देलखण्ड की सांस्कृतिक विरासत' विषय पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी सम्पन्न हुई। इस संगोष्ठी के समापन समारोह के मुख्य अतिथि अध्यक्ष, उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग उ.प्र. प्रयागराज प्रो. ईश्वर शरण विश्वकर्मा थे, जिन्होंने अपने उद्बोधन में बुन्देलखण्ड को भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग बताया तथा कहा कि वर्तमान समय में सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड के इतिहास के पुनर्लेखन की महती आवश्यकता है। संगोष्ठी के समापन समारोह की अध्यक्षता कर रहे प्रो. अम्बिका दत्त शर्मा द्वारा अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में यह कहा गया कि बुन्देलखण्ड वह भूमि है जिसमें प्राचीन समय से लेकर वर्तमान समय तक अनेक संस्कृतियों से संबंधित लोगों को अपने अंदर शरण दिया, साथ ही इन्होंने यह भी बतलाया भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में बुन्देलखण्ड का विशेष योगदान रहा है। जिसके उदाहरण स्वरूप झाँसी की रानी एवं रतोना जैसे आंदोलन हुए। आज संगोष्ठी के दो तकनीकी सत्र आयोजित किये गये। द्वितीय अकादमिक सत्र की अध्यक्षता डॉ. विश्वजीत सिंह परमार एवं प्रो. के. के. त्रिपाठी ने की। जिसमें कन्हैया यादव द्वारा ओरछा की सांस्कृतिक विरासत, अरूण झा द्वारा ललितपुर का अप्रतिम स्थल = चांदपुर के विशेष सन्दर्भ में, सृष्टि घोष द्वारा रॉक आर्ट ऑफ खानपुर, निधि सोनी द्वारा बुन्देलखण्ड के लोकजीवन में लोक उत्सव एवं मेले, डॉ. सत्यनारायण देवलिया द्वारा बुन्देलखण्ड की वैभवशाली विरासत = बालावेहट (जनश्रुतियों के आलोक में), अवधेश प्रताप सिंह तोमर द्वारा शास्त्री संगीत एवं गायन का वाचन किया। ।

तृतीय अकादमिक सत्र की अध्यक्षता डॉ. सरोज गुप्ता एवं श्री विनोद मिश्र ने की। जिसमें डॉ. विश्वजीत सिंह परमार द्वारा बुन्देलखण्ड की लोक संस्कृति के विविध पक्ष, डॉ. भरत कुमार शुक्ला द्वारा महाराजा छत्रसाल के गौरव का प्रतीक धुबेला संग्रहालय, शीरीन कॉमफर्ट द्वारा द अनटच्ड हेरीटेज ऑफ बुन्देलखण्ड, राजेश अहिरवार द्वारा बुन्देलखण्ड की संस्कृति में लोकपर्व 'सुआटा', डॉ. दीपक मोदी द्वारा बुन्देलखण्ड की सांस्कृतिक विरासत में एकता, डॉ. राहुल स्वर्णकार द्वारा बुन्देलखण्ड के संगीत में ताल वाद्य परम्परा का वाचन किया।

चतुर्थ अकादमिक सत्र जिसकी अध्यक्षता प्रो. नवीन गिडियन एवं डॉ. प्रदीप शुक्ला ने की। जिसमें डॉ. गोविन्द सिंह द्वारा रहली अंचल का प्राचीन शैव मूर्तिशिल्प, डॉ. अलीम अहमद द्वारा बुंदेली कला संस्कृति वैभव के प्रचार प्रसार में जन माध्यमों की भूमिका, आकांक्षा जैन द्वारा बुन्देलखण्ड की संस्कृति संवर्धन में कान्तिकुमार जैन का योगदान, दीपशिखा सिंह के द्वारा बुन्देलखण्ड की लोकगाथाएं (दिवान लाल हरदौल) एवं कारसंदेव के विशेष संदर्भ में तथा डॉ. अर्चना द्विवेदी द्वारा बुन्देलखण्ड का स्थापत्य शिल्प का वाचन किया गया।

समापन सत्र में अतिथियों का स्वागत डॉ. आर. पी. सिंह एवं आभार प्रो. नागेश दुबे द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन एवं संगोष्ठी का प्रतिवेदन डॉ. सुरेन्द्र कुमार यादव ने किया। इस संगोष्ठी के प्रायोजक भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली एवं भारतीय स्टेट बैंक, विश्वविद्यालय शाखा, सागर हैं। इस संगोष्ठी में प्रो. अशोक अहिरवार, डॉ. संजय कुमार, डॉ. कृष्णा राव, डॉ. पंकज सिंह, डॉ. संजय बरोलिया, डॉ. विश्वजीत परमार, डॉ. दीपशिखा सिंह परमार, डॉ. के. के. त्रिपाठी के साथ-साथ बड़ी संख्या में शोधार्थी एवं विद्यार्थीगण देश के विभिन्न राज्यों से उपस्थित रहे।

खास-खबरें

पदमश्री अवार्ड से सम्मानित राम सहाय पांडेय का कुलपति ने किया सम्मान

सागर। डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रोफेसर नीलिमा गुप्ता मेम ने बुंदेलखंड की राई नृत्य को विश्व के 11 देशों तक ले जाने वाले, इस वर्ष पदमश्री सम्मान से सम्मानित किए गए दादा राम सहाय पांडे का सम्मान किया। प्राचीन भारत एवं पुरातत्व विभाग द्वारा आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार में दादा मुख्य अतिथि थे। इस अवसर पर सागर के गणमान्य लोगों में डॉ सरोज गुप्ता, डॉ वर्षा सिंह, प्रसिद्ध आल्हा रचियता एवं गायक हरगोविंद विश्व जी भी शामिल थे।

बुंदेलखंड जैसी विरासतें ही भारत की साझी संस्कृति हैं : प्रो. ईश्वर शरण

सागर | बुंदेलखंड जैसी विरासतें ही भारत की साझी संस्कृति हैं। यह बात उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग उत्तरप्रदेश प्रयागराज के अध्यक्ष प्रो. ईश्वर शरण विश्वकर्मा ने कही। वे डॉ. हरीसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास विभाग में बुंदेलखंड की सांस्कृतिक विरासत विषय पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने अपने उद्बोधन में बुंदेलखंड को भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग बताया। साथ ही कहा कि वर्तमान समय में सम्पूर्ण बुंदेलखंड के इतिहास के पुनर्लेखन की जरूरत है।

अध्यक्षता कर रहे प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा ने कहा कि बुंदेलखंड वह भूमि है जिसने प्राचीन समय से लेकर वर्तमान समय तक अनेक संस्कृतियों से संबंधित लोगों को अपने अंदर शरण दी। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में बुंदेलखंड का विशेष योगदान रहा है। जिसके उदाहरण स्वरूप झांसी की रानी एवं रतौना जैसे आंदोलन हुए। अकादमिक सत्र में कन्हैया यादव द्वारा ओरछा की सांस्कृतिक विरासत, अरूण झा द्वारा ललितपुर का अप्रतिम स्थल चांदपुर के विशेष सन्दर्भ में, सृष्टि घोष द्वारा रॉक आर्ट ऑफ खानपुर, निधि सोनी द्वारा बुंदेलखंड के लोकजीवन में लोक उत्सव एवं मेले, डॉ. सत्यनारायण देवलिया द्वारा बुंदेलखंड की वैभवशाली विरासतः बालावेहट (जनश्रुतियों के आलोक में), अवधेश प्रताप सिंह तोमर द्वारा शास्त्रीय संगीत एवं गायन का वाचन किया गया।

डा. हरीसिंह गौर विवि का गौरवाणी नाम से होगा रेडिया स्टेशन

शत्रुघन केशरवानी ● सागर

डा. हरीसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय में जल्द ही खुद का अपना कम्युनिटी रेडियो स्टेशन बनेगा। भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय ने हाल ही में विश्वविद्यालय को रेडियो स्टेशन का टावर लगाने की मंजूरी दे दी है। मप्र में यह पहला केंद्रीय विश्वविद्यालय होगा, जिसका अपना रेडियो स्टेशन होगा। गौरवाणी नाम से तैयार हो रहे इस रेडियो स्टेशन से अकादमिक, सांस्कृतिक व जागरूकता वाले कार्यक्रमों का प्रसारण होगा।

सूचना एवं प्रसार मंत्रालय से मिली मंजूरी

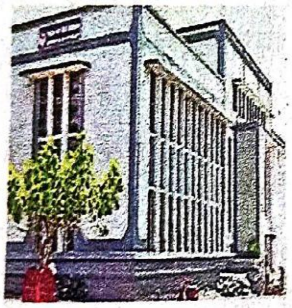

सागर स्थित डा. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय का फाइल चित्र।

विश्वविद्यालय के मीडिया प्रभारी डा. विवेक जायसवाल ने बताया कि इसकी फ्रीक्वेंसी 89.6 मेगाहर्ट्ज होगी। इसका प्रसारण 30 से 40 किलोमीटर तक होगा। हालांकि विशेषज्ञों की सलाह के बाद प्रसारण की दूरी कम, ज्यादा भी हो सकती है।

सामुदायिक रेडियो का उद्देश्य आसपास के विभिन्न स्थानीय समुदायों को उनकी जरूरत और महत्व के अनुसार रेडियो कार्यक्रम बनाना और प्रसारित करना है। इससे शिक्षा, स्थानीय कौशल, रोजगार, स्वास्थ्य एवं संस्कृति का संवर्धन और संरक्षण संबंधी कार्यक्रम प्रसारित होंगे। गौरवाणी रेडियो स्टेशन से जनसंचार के विद्यार्थी तो लाभान्वित होंगे ही साथ ही बुन्देली संस्कृति के विकास और समृद्धि में एक नया आयाम जुड़ेगा। रेडियो के कार्यक्रम निर्माण में आमजन के साथ ही स्थानीय कलाकारों और विद्यार्थियों की सहभागिता प्राथमिकता में होगी। हिंदी और बुंदेली दोनों भाषाओं में इसका प्रसारण होगा।

विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने बताया रेडियो स्टेशन की स्वीकृति मिल गई है, जो बच्चे विश्वविद्यालय से दूर हैं उन्हें व जिले के लोग इससे लाभान्वित होंगे।

विश्वविद्यालय में ऑनलाइन व्याख्यान का आयोजन

'प्रत्येक नागरिक के मन में स्वाधीनता के मूल्यबोधों का होना आवश्यक'

पत्रिका न्यूज नेटवर्क

patrika.com

सागर. डॉ हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय के समाजविज्ञान शिक्षण अधिगम केंद्र, भारतीय दार्शनिक अनुसन्धान परिषद नई दिल्ली एवं राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान (नई दिल्ली) के संयुक्त तत्वावधान में ऑनलाइन व्याख्यान का आयोजन किया गया।

कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि प्रत्येक नागरिक के मन में स्वाधीनता के मूल्यबोधों का होना आवश्यक है। इसी माध्यम से हम अपनी विरासत को संवर्धित और संरक्षित करते हुए आगे बढ़ सकते है। वैश्विक चुनौतियों से लड़ने के लिए हमारी प्राचीन ज्ञान-विरासत और साझी संस्कृति एक बहुमूल्य निधि है। भारत ग्राम प्रधान देश है, गाँव को समृद्ध और आत्मनिर्भर करके ही हम आबादी के उद्देश्यों को हासिल कर सकते है। प्रो. गुप्ता ने बताया कि स्वाधीनता बोध एक वैचारिक श्रृंखला है, जो व्यक्तिगत तौर पर खुद में सुधार एवं आत्मनिर्भरता से जुड़ा है। भारतीय दार्शनिक अनुसन्धान परिषद् नई दिल्ली के सदस्य सचिव प्रो. सच्चिदानंद मिश्र ने आजादी के अमृत महोत्सव को एक ज्ञान यात्रा के रूप में रेखांकित किया। प्रो. मिश्र ने बताया कि इस तरह के संयुक्त आयोजन भारतीय ज्ञान-विषयों की आत्मिक एवं अंतर्भूत एकात्मकता को प्रतिबिम्बित करते है। *उनका कहना था कि सागर* विश्वविद्यालय के टीएलसी इस स्वरुप में कार्य करते हुए समाजविज्ञान विषयक ज्ञान संरचनाओं को विभिन्न परिचर्चाओं-संवाद के माध्यम से घनीभूत कर रहा है। व्याख्यान के मुख्य वक्ता विख्यात मानवशास्त्री एवं यूनेस्को पीठ नीदरलैंड के प्रो. मोहनकांत ने बताया कि ब्रितानी उपनिवेशवादी हुकूमत ने प्रवासी भारतीयों के साथ गुलामों जैसा व्यवहार किया। यह सभी प्रवासी भारतीय अपनी अपनी जगह भारत की आजादी के लिए जुल्म और यातनाएं सहते हुए आजादी की लड़ाई लड़ रहे थे। सूरीनाम, मॉरिशस, गुयाना, त्रिनाद सहित कई देशों में *जहां-जहां गुलाम बनाकर लाये गये* भारतीय अपने धर्म, भाषा और सांस्कृतिक मूल्यों के लिए भी लड़ रहे थे। भारत के बाहर रहने वाले भारतीयों की आवाज देश की आजादी के बाद भी नहीं सुनी गई। उनके बारे में देश के विश्वविद्यालय बहुत कम जानते है। आज यही समय है जब आजादी के अमृत महोत्सव की इस यात्रा में डायस्पोरा स्टडीज के अंतर्गत शोध कराएँ जाये. ऐसा करके ही हम प्रवासी भारतीयों के संघर्ष से परिचित हो सकेंगे।

नागरिकों के मन में स्वाधीनता के मूल्यबोधों का होना आवश्यक: कुलपति गुप्ता

सागर, देशबन्धु। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के समाज विज्ञान शिक्षण अधिगम केंद्र भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद नई दिल्ली एवं राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में आजादी का अमृत महोत्सव स्वाधीनता संग्राम का मूल्यबोध व्याख्यानमाला के अंतर्गत ऑनलाइन व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि प्रत्येक नागरिक के मन में स्वाधीनता के मूल्यबोधों का होना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि इसी माध्यम से हम अपनी विरासत को संवर्धित और संरक्षित करते हुए आगे बढ़ सकते हैं। वैश्विक चुनौतियों से लड़ने के लिए हमारी प्राचीन ज्ञान विरासत और साझी संस्कृति एक बहुमूल्य निधि है। भारत ग्राम प्रधान देश हैं, गांव को समृद्ध और आत्मनिर्भर करके ही हम आजादी के उद्देश्यों को हासिल कर सकते हैं। प्रो. गुप्ता ने बताया कि स्वाधीनता बोध एक वैचारिक श्रृंखला है, जो व्यक्तिगत तौर पर खुद में सुधार एवं आत्मनिर्भरता से जुड़ा है। आजादी के अमृत महोत्सव हमें यह अवसर देता है कि हम एक बार फिर भारतीय मन, मानस और संस्कृति को गौरवान्वित हो कर याद करें। उन्होंने कहा कि भारत की चिंता हमेशा से ही आध्यात्मिक और सांस्कृतिक स्वाधीनता की रही है। विषय प्रवर्तन करते हुए भारतीय दार्शनिक अनुसन्धान परिषद् नई दिल्ली के सदस्य सचिव प्रो. सच्चिदानंद मिश्र ने आजादी के अमृत महोत्सव को एक ज्ञान यात्रा के रूप में रेखांकित किया। प्रो. मिश्र ने बताया कि इस तरह के संयुक्त आयोजन भारतीय ज्ञान विषयों की आत्मिक एवं अंतर्भूत एकात्मकता को प्रतिबिम्बित करते हैं। प्रो. मिश्र ने बताया कि यह व्याख्यान मूलत: देश की आजादी में देश से बाहर हुए जन संघर्षों को याद करने का अवसर है। हम अक्सर यह भूल जाते है कि भारत के बाहर रहने वाले प्रवासी भारतीयों ने भी देश की आजादी के लिए अपना बलिदान दिया है।

प्रवासियों का धर्म, भाषा और सांस्कृतिक मूल्यों के लिए दोहरा संघर्ष: प्रो. मोहनकांत

व्याख्यान के मुख्यवक्ता विख्यात मानवशास्त्री एवं यूनेस्को पीठ नीदरलैंड के प्रो. मोहनकांत ने बताया कि ब्रितानी उपनिवेशवादी हुकूमत ने प्रवासी भारतीयों के साथ गुलामों जैसा व्यवहार किया। यह सभी प्रवासी भारतीय अपनी अपनी जगह भारत की आजादी के लिए जुल्म और यातनाएं सहते हुए आजादी की लड़ाई लड़ रहे थे। सूरीनाम, मॉरिशस, गुयाना, त्रिनिदाद सहित कई देशों में जहां-जहां गुलाम बनाकर लाए गए भारतीय अपने धर्म, भाषा और सांस्कृतिक मूल्यों के लिए भी लड़ रहे थे। भारत के बाहर रहने वाले भारतीयों की आवाज देश की आजादी के बाद भी नहीं सुनी गई। उनके बारे में देश के विश्वविद्यालय बहुत कम जानते हैं। आज यही समय है जब आजादी के अमृत महोत्सव की इस यात्रा में डायस्पोरा स्टडीज के अंतर्गत शोध कराए जाये। ऐसा करके ही हम प्रवासी भारतीयों के संघर्ष से परिचित हो सकेंगे। इस व्याख्यान में भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के अध्यक्ष प्रो. आरसी सिन्हा, प्रतिभागी, विश्वविद्यालय के शिक्षक, शोधार्थी सहित देश के विभिन्न क्षेत्रों के लोग जुड़े हुए थे। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान नई दिल्ली के डॉ. अंशुल खरबंदा ने आभार वक्तव्य के साथ किया। कार्यक्रम का संचालन व्याख्यानमाला के समन्वयक डॉ. संजय शर्मा ने किया।

नागरिकों के मन में स्वाधीनता के मूल्यबोधों का होना आवश्यकः कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता

विवि के समाज विज्ञान केंद्र में ऑनलाइन व्याख्यान का आयोजन

जागरण न्यूज, सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के समाज विज्ञान शिक्षण अधिगम केंद्र भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद नई दिल्ली एवं राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में आजादी का अमृत महोत्सव स्वाधीनता संग्राम का मूल्यबोध व्याख्यानमाला के अंतर्गत ऑनलाइन व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि प्रत्येक नागरिक के मन में स्वाधीनता के मूल्यबोधों का होना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि इसी माध्यम से हम अपनी विरासत को संवर्धित और संरक्षित करते हुए आगे बढ़ सकते हैं। वैश्विक चुनौतियों से लड़ने के लिए हमारी प्राचीन ज्ञान विरासत और साझी संस्कृति एक बहुमूल्य निधि है। भारत ग्राम प्रधान देश है, गांव को समृद्ध और आत्मनिर्भर करके ही हम आजादी के उद्देश्यों को हासिल कर सकते हैं। प्रो. गुप्ता ने बताया कि स्वाधीनता बोध एक वैचारिक श्रृंखला है, जो व्यक्तिगत तौर पर खुद में सुधार एवं आत्मनिर्भरता से जुड़ा है।

आजादी के अमृत महोत्सव हमें यह अवसर देता है कि हम एक बार फिर भारतीय मन, मानस और संस्कृति को गौरवान्वित हो कर याद करें। उन्होंने कहा कि भारत की चिंता हमेशा से ही आध्यात्मिक और सांस्कृतिक स्वाधीनता की रही है। विषय प्रवर्तन करते हुए भारतीय दार्शनिक अनुसन्धान परिषद् नई दिल्ली के सदस्य सचिव प्रो. सच्चिदानंद मिश्र ने आजादी के अमृत महोत्सव को एक ज्ञान यात्रा के रूप में रेखांकित किया। प्रो. मिश्र ने बताया कि इस तरह के संयुक्त आयोजन भारतीय ज्ञान विषयों की आत्मिक एवं अंतर्भूत एकात्मकता को प्रतिबिम्बित करते हैं। प्रो. मिश्र ने बताया कि यह व्याख्यान मूलतः देश की आजादी में देश से बाहर हुए जन संघर्षों को याद करने का अवसर है। हम अक्सर यह भूल जाते है कि भारत के बाहर रहने वाले प्रवासी भारतीयों ने भी देश की आजादी के लिए अपना बलिदान दिया है।

प्रवासियों का धर्म, भाषा और सांस्कृतिक मूल्यों के लिए दोहरा संघर्ष : प्रो. मोहनकांत

व्याख्यान के मुख्यवक्ता विख्यात मानवशास्त्री एवं यूनेस्को पीठ नीदरलैंड के प्रो. मोहनकांत ने बताया कि ब्रितानी उपनिवेशवादी हुकूमत ने प्रवासी भारतीयों के साथ गुलामों जैसा व्यवहार किया। यह सभी प्रवासी भारतीय अपनी अपनी जगह भारत की आजादी के लिए जुल्म और यातनाएं सहते हुए आजादी की लड़ाई लड़ रहे थे। सूरीनाम, मॉरिशस, गुयाना, त्रिनिदाद सहित कई देशों में जहां-जहां गुलाम बनाकर लाए गए भारतीय अपने धर्म, भाषा और सांस्कृतिक मूल्यों के लिए भी लड़ रहे थे। भारत के बाहर रहने वाले भारतीयों की आवाज देश की आजादी के बाद भी नहीं सुनी गई। उनके बारे में देश के विश्वविद्यालय बहुत कम जानते हैं। आज यही समय है जब आजादी के अमृत महोत्सव की इस यात्रा में डायस्पोरा स्टडीज के अंतर्गत शोध कराएं जाये। ऐसा करके ही हम प्रवासी भारतीयों के संघर्ष से परिचित हो सकेंगे। इस व्याख्यान में भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के अध्यक्ष पो. आरसी सिन्हा, प्रतिभागी, विश्वविद्यालय के शिक्षक, शोधार्थी सहित देश के विभिन्न क्षेत्रों के लोग जुड़े हुए थे। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान नई दिल्ली के डॉ. अंशुल खरबंदा ने आभार वक्तव्य के साथ किया। कार्यक्रम का संचालन व्याख्यानमाला के समन्वयक डॉ. संजय शर्मा ने किया।

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस आज

'मातृभाषा होती है राष्ट्रीय अस्मिता और सांस्कृतिक स्वाभिमान का प्रतीक'

पत्रिका **क्या आप जानते हैं**

भारतेन्दु हरिश्चंद्र जिन्होंने लिखा है...

निज भाषा उन्नति अहैए सब
उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न
हिय को सूल।।

महात्मा गांधी ने अपने पत्र हिंदी नवजीवन में लिखा है इस विदेशी भाषा, अंग्रेजी के माध्यम ने बच्चों के दिमाग को शिथिल कर दिया है। एक तरफजहां हिंदी सिनेमा खरबों रूपयों की इंडस्ट्री है तो दूसरी तरफदेश के सर्वाधिक

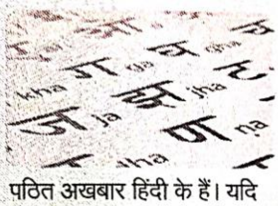

पठित अखबार हिंदी के हैं। यदि हम टेलीविजन की बात करें तो दो तिहाई चैनल हिंदी के हैं और सर्वाधिक देखे जाने वाले चैनलों में हिंदी आगे है।

सागर. पूरे विश्व में 21 फरवरी अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के रूप में मनाया जाता है। किसी भी देश की राष्ट्रीय अस्मिता तथा सांस्कृतिक स्वाभिमान का प्रतीक मातृभाषा होती है। इसे मातृभाषा दिवस के रूप में मनाने का संकल्प सर्वप्रथम बांग्लादेश द्वारा किया गया। यूनाइटेड नेशन्स एजूकेशनल, साइंटिफिक एंड कल्चरल ऑर्गनाइजेशन की आमसभा ने 21 फरवरी को अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के रूप में मनाने का संकल्प नवंबर 1999 में लिया, जिसे यूनाइटेड नेशन्स की आमसभा ने 2002 में इसका स्वागत किया।

16 मई 2007 को यूनाइटेड नेशन्स ने यह संकल्प लिया कि समस्त देशों को मातृभाषा को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहित किया जाए। यह दिन अंतर्राष्ट्रीय वार्षिक उत्सव के रूप में मनाया जाता है। भाषा वह माध्यम है, जिसके द्वारा हम अपने विचारों को दूसरों से आदान-प्रदान कर सकते हैं और वह हमारी भौतिक और अभौतिक सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित कर इसे शक्तिशाली बनाए रखती है। मातृभाषा को बढ़ावा देने के लिए सभी कदम न केवल भाषा के विविध बहुभाषी शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए बल्कि दुनिया भर को प्रोत्साहित कर जागरूकता विकसित करने और समझ और संवाद के आधार पर एकजुटता को प्रदर्शित करने के लिए है। पूरे विश्व में हर 14 दिन में कोई एक भाषा विलुप्त हो रही है और अपने देश भारत में भी स्थिति अच्छी नहीं है। भारत में कुल 19,500 भाषाएं बोली जाती हैं, जिनमें से करीब 2,900 विलुप्त होने की कगार पर हैं। सत्य तो यह है कि इन भाषाओं को मात्र 100 या इससे कम लोग बोलते हैं। मात्र 121 भाषाएँ 10,000 से अधिक लोग बोलते हैं। आश्चर्य की बात यह है कि 121 भाषाओं में 99 भाषाएं भारत के 3.3 प्रतिशत लोग ही बोलते हैं और बाकी 22 भाषाएं भारत के 96.7 प्रतिशत लोग बोलते हैं और यही 22 भाषाएं हैं, जिन्हें भारत के संविधान की 8वीं अनुसूची में आधिकारिक भाषा का दर्जा प्राप्त है। यह आंकड़ें हमें स्पष्ट बताते हैं कि हमें अपनी मातृभाषा के विस्तार के लिए पूर्ण प्रयास करने होंगे और यदि हमने ऐसा नहीं किया तो हमारी भाषा भी उसी सूची में शामिल होगी जो हर 14 दिन में विलुप्त हो रही है।मातृभाषा उसे कहते हैं जिस भाषा को बच्चा जिंदगी में पहली बार बोलता है। बच्चा बचपन में अधिकतर अपनी माँ के पास ही रहता है, और स्वाभाविक है कि माँ जो भाषा बोलती है, बच्चा भी उसी को सीखता है और बोलता है। हर मातृभाषा की कुछ खासियत होती है और मुख्यतः वह 3 चीजों को जोड़ती है।

- नीलिमा गुप्ता, कुलपति, डॉ. हरीसिंह गौर केंद्रीय विवि

अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर विशेष

राष्ट्रीय अस्मिता का द्योतक है अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस : प्रो. नीलिमा गुप्ता

सागर, देशबन्धु। पूरे विश्व में 21 फरवरी अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के रूप में मनाया जाता है। किसी भी देश की राष्ट्रीय अस्मिता तथा सांस्कृतिक स्वाभिमान का प्रतीक मातृभाषा होती है। 21 फरवरी को मातृभाषा दिवस के रूप में मनाने का संकल्प सर्वप्रथम बांग्लादेश द्वारा किया गया। यूनाइटेड नेशन्स एजूकेशनल, साईंटिफिक एंड कल्चरल ऑर्गनाइजेशन (यूनेस्को) की आमसभा ने 21 फरवरी को अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के रूप में मनाने का संकल्प नवंबर 1999 में लिया जिसे यूनाइटेड नेशन्स की आमसभा ने 2002 में इसका स्वागत किया। 16 मई, 2007 को यूनाइटेड नेशन्स ने यह संकल्प लिया कि समस्त देशों को मातृभाषा को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहित किया जाये।

भाषा वह माध्यम है जिसके द्वारा हम अपने विचारों को दूसरों से आदान-प्रदान कर सकते हैं और वह हमारी भौतिक और अभौतिक सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित कर इसे शक्तिशाली बनाये रखती है। मातृभाषा को बढ़ावा देने के लिए सभी कदम न केवल भाषा के विविध बहुभाषी शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए, बल्कि दुनिया भर को प्रोत्साहित कर जागरूकता विकसित करने और समझ और संवाद के आधार पर एकजुटता को प्रदर्शित करने के लिए है। पूरे विश्व में हर 14 दिन में कोई एक भाषा विलुप्त हो रही है, और अपने देश भारत में भी स्थिति अच्छी नहीं है। भारत में कुल 19,500 भाषायें बोली जाती हैं जिनमें से करीब 2,900 विलुप्त होने की कगार पर हैं। सत्य तो यह है कि इन भाषाओं को मात्र 100 या इससे कम लोग बोलते हैं। मात्र 121 भाषाएँ 10,000 से अधिक लोग बोलते हैं। आश्चर्य की बात यह है कि 121 भाषाओं में 99 भाषायें भारत के 3.3 प्रतिशत लोग ही बोलते हैं और बाकी 22 भाषायें भारत के 96.7 प्रतिशत लोग बोलते हैं और यही 22 भाषायें हैं जिन्हें भारत के संविधान की 8वीं अनुसूची में आधिकारिक भाषा का दर्जा प्राप्त है। यह आंकड़ें हमें स्पष्ट बताते हैं कि हमें अपनी मातृभाषा के विस्तार के लिए पूर्ण प्रयास करने होंगे और यदि हमने ऐसा नहीं किया तो हमारी भाषा भी उसी सूची में शामिल होगी जो हर 14 दिन में विलुप्त हो रही है। मातृभाषा उसे कहते हैं जिस भाषा को बच्चा जिंदगी में पहली बार बोलता है।

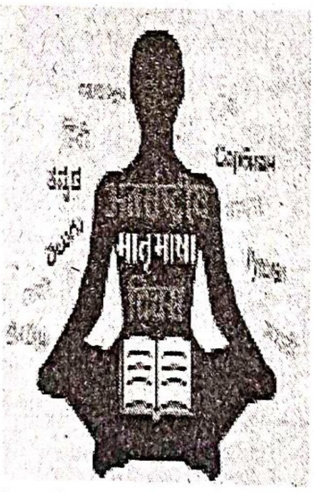

बच्चा बचपन में अधिकतर अपनी माँ के पास ही रहता है, और स्वाभाविक है कि माँ जो भाषा बोलती है, बच्चा भी उसी को सीखता है और बोलता है। हर मातृभाषा की कुछ खासियत होती है और मुख्यत: वह 3 चीजों को जोड़ती है सांस्कृतिक मूल्य, परंपरा और इतिहास। ज्यादातर लोगों के लिए यह मात्र एक भाषा है लेकिन बहुभाषी परिवारों में बच्चा एक साथ दो भाषा सीख सकता है, परन्तु ऐसा होने पर राजनीतिक एवं सांस्कृतिक एकरूपता को प्राथमिकता दी जा सकती है। हम यह भी कह सकते हैं कि यह हमारी मूल भाषा है या हम इसे ऐसे भी परिभाषित कर सकते हैं कि एक भाषा जिससे दूसरी भाषा निकलती है उसे मातृभाषा कहा जाता है। अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस भाषा संबंधी और सांस्कृतिक विविधता में जागरूकता को बढ़ावा देने और बहुभाषावाद को बढ़ावा देने ... 21 फरवरी एक अंतर्राष्ट्रीय दिवस उत्सव के रूप में मनाया जाता है जिससे कि भाषायी और ... विविधता बहुभाषिकता को बढ़ावा दे सके और उसका निरंतर विकास कर सकें। विश्व के ... देश में प्राथमिक शिक्षा विदेशी भाषा में नहीं दी जाती। विश्व के परिप्रेक्ष्य में लगभग सभी ... विकसित देशों में वहाँ की शिक्षा, शोध कार्यों, शासन-प्रशासन की भाषा वहाँ की भाषा होती है। अपने देश में भी ऐसे ही भाव को प्रोत्साहित करना चाहिए जिससे कि सभी कार्य मातृभाषा में ... भारत के महापुरूषों, शिक्षाविदों जैसे विनोबा भावे, महात्मा गाँधी, पं. मदन मोहन मालवीय, ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के भी यहीं विचार थे। पूर्व में किए गए अध्ययन यहीं बताते हैं कि ... भाषा के माध्यम से शिक्षा ग्रहण करने से चिंतन एवं विचारों में मनोवैज्ञानिकता एवं सृजनात्मकता आती है और कठिन विषय भी सुगमता से समझ में आ जाते हैं। लोकमान्य तिलक ने हिंदी ... में विचारों में लिखा है 'यह तो उस आंदोलन का अंग है जिसे मैं राष्ट्रीय आंदोलन कहूँगा और ... उद्देश्य समस्त भारतवर्ष के लिए एक राष्ट्रीय भाषा की स्थापना करना है क्योंकि सबके लिए ... भाषा राष्ट्रीयता का महत्वपूर्ण अंग है'। कुछ इसी प्रकार के विचार भारतेन्दु हरिश्चंद्र के रहे हैं जिन्होंने लिखा है:-

निंज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।।

महात्मा गाँधी ने अपने पत्र हिंदी नवजीवन में लिखा है 'इस विदेशी भाषा (अंग्रेजी) के माध्यम ने बच्चों के दिमाग को शिथिल कर दिया है, उनके स्नायुओं पर अनावश्यक जोर डाला है उन्हें रट्टू और नकलची बना दिया है तथा मौलिक कार्यों और विचारों के लिए सर्वथा अयोग्य बना दिया है।' एक तरफ जहां हिंदी सिनेमा खरबों रूपयों की इंडस्ट्री है तो दूसरी तरफ देश के सर्वाधिक पठित अखबार हिंदी के हैं। यदि हम टेलीविजन की बात करें तो दो तिहाई चैनल हिंदी के हैं और सर्वाधिक देखे जाने वाले चैनलों में हिंदी आगे है। विज्ञापन में भी हिंदी का बोलबाला है। आज अन्य देशों में भी हिंदी सीखने की जिज्ञासा बढ़ती जा रही है।

हिंदी सिनेमा, हिंदी टेलीविजन के बढ़ते प्रसार ने हिंदी सीखने की चाहत को कई गुना बढ़ा दिया है। आज पूरे विश्व में कोई योग को समझने के लिए, कोई भारतीय अध्यात्म को समझने के लिए हिंदी को सीखने का प्रयास कर रहा है। अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर यह आवश्यक है कि मातृभाषा में आ रही चुनौतियों से निपटने के लिए प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर के साथ-साथ उच्च शिक्षा में भी हिंदी भाषा प्रयोग को बढ़ावा देने के प्रयास किये जायें तथा सभी संस्थानों में हिंदी को प्रोत्साहित किया जाये। हिंदी ज्ञान, विज्ञान, चिंतन, परंपरा की भाषा एवं उचित माध्यम बने भारत का ज्ञान, ज्ञान का द्वार है। इस अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर, आइए, हम सभी संकल्प लें कि हम अपनी मातृभाषा का सम्मान करें क्योंकि

मातृभाषा का सम्मान, देश का सम्मान है,
हमारी स्वतंत्रता वहाँ है, मातृभाषा जहाँ है।

इसी सम्मान से हम अपने देश, भारत का सम्मान बढ़ाने में और नए भारत की संरचना करने में सफल होंगे।

मातृभाषा से ही राष्ट्र की समृद्धि संभव है : प्रो. जैन

सागर (आरएनएन)। डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के जवाहरलाल नेहरू ग्रंथालय सभागार में अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर हमारी मातृभाषाएं विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। प्रख्यात भाषाविद और चिन्तक प्रो वृषभ प्रसाद जैन ने मुख्य वक्तव्य देते हुए कहा कि भाषा हमें पहचान देती है और पहचान बनाती है। व्यक्तित्व निर्माण में मातृभाषा भाषा एक महत्वपूर्ण कारक है। उन्होंने वर्तमान समय में मातृभाषा की स्थिति को देखते हुए चिंता व्यक्त की और कहा कि आजादी के बाद के वर्षों में यह पहचान धूमिल होती जा रही है और भाषायी परतंत्रता बढ़ी है। केवल हिन्दी ही नहीं बल्कि तमिल, मलयालम, तेलगू जैसी तमाम भाषाओं की स्थिति एक जैसी है। भारतीय भाषाओं का व्याकरणकोश अंग्रेजी भाषा से प्रभावित है। हम अभी तक भारतीय भाषाओं के व्याकरण और शब्दकोष निर्माण में पीछे हैं। उन्होंने कहा कि भाषाओं की समृद्धि से ही राष्ट्र की समृद्धि का सपना देखा जा सकता है। उन्होंने कई उदाहरणों के जरिये मातृभाषा की पहचान करने के तरीके भी बताये। उन्होंने कहा कि भाषा के बिना मनुष्यता अधूरी है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो नीलिमा ने कहा कि मनुष्य अपने जन्म से ही भाषा का प्रयोग शुरू कर देता है। पैदा होने के बाद सबसे पहला शब्द वह मां सीखता है। इसलिए इस शब्द से इसको अलग नहीं किया जा सकता। उन्होंने कहा कि भारत 19500 भाषाओं से समृद्ध देश है जिसमें 121 भाषाएं केवल दस हजार लोगों तक सीमित है, जिनके द्वारा वे बोली जाती हैं। इस तरह 22 प्रमुख भाषाएं जो भारत के लोग बोलते हैं उन्हें संविधान में शामिल किया गया। मातृभाषा की महत्ता बताते हुए उन्होंने कहा कि नोबेल पुरस्कार से ज्यादातर उन्ही लोगों को सम्मानित किया गया है जिन्होंने अपना कार्य मातृभाषा में किया है। उन्होंने आकड़ों के माध्यम से विश्व में हिंदी भाषा की स्थिति पर बात रखते हुए कहा कि आज दो तिहाई आबादी हिंदी समाचार पत्र पढ़ रही है व विश्व भर के सिनेमाघरों में हिंदी सिनेमा प्रदर्शित होती है। गूगल के आकड़ों के अनुसार वर्ष 2024 तक हिंदी में मोबाइल उपयोगकर्ताओं की संख्या अंग्रेजी से ज्यादा रहेगी। अपने उद्बोधन के अंत में उन्होंने हिंदी भाषा की विविधता को सरलता से समझाया और सभी को मातृभाषा के संवर्धन एवं संरक्षण के लिए संकल्पित होने का संदेश दिया। भाषा विज्ञान और हिन्दी विभाग की अध्यक्ष प्रो चन्दा बेन ने स्वागत वक्तव्य दिया।

छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो अम्बिकादत्त शर्मा ने विषय प्रवर्तन किया उन्होंने प्रसिद्ध कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर और बलवंत गार्गी के बीच वार्तालाप का उदाहरण देते हुए मातृभाषा के महत्त्व के रेखांकित किया। व्याख्यान के उपरांत मातृभाषा दिवस के उपलक्ष्य में विश्वविद्यालय स्तर पर आयोजित आत्मनिर्भरता में मातृभाषा का योगदान विषय पर निबंध प्रतियोगिता एवं बहुभाषिकता भारत के लिए वरदान है विषय पर वाद विवाद प्रतियोगिता में विजयी प्रतिभागियों को मुख्य समारोह में पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम का संचालन हिंदी विभाग के प्राध्यापक डॉ राजेंद्र यादव ने किया एवं आभार डॉ आशुतोष ने ज्ञापित किया।

व्यक्तित्व निर्माण में मातृभाषा महत्वपूर्ण कारक

नवभारत न्यूज

सागर 21 फरवरी.डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के जवाहरलाल नेहरू ग्रंथालय सभागार में अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर हमारी मातृभाषाएं विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया.

प्रख्यात भाषाविद और चिंतक प्रो. वृषभ प्रसाद जैन कहा कि भाषा हमें पहचान देती है और पहचान बनाती है. व्यक्तित्व निर्माण में मातृभावा भाषा एक महत्त्वपूर्ण कारक है. उन्होंने कहा कि आजादी के बाद के वर्षों में यह पहचान धूमिल होती जा रही है और भाषायी परतंत्रता बड़ी हैं. केवल हिन्दी ही नहीं बल्कि तमिल, मलयालम, तेलगू जैसी तमाम भाषाओं की स्थिति एक जैसी है. कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि मनुष्य अपने जन्म से ही भाषा का प्रयोग शुरू कर देता है. पैदा होने के बाद सबसे पहला शब्द वह माँ सीखता है, इसलिए इस शब्द से उसको अलग नहीं किया जा सकता. उन्होंने कहा कि यूनेस्को ने मातृभाषा दिवस मनाने का प्रावधान किया. भारत 19500 भाषाओं से समृद्ध देश है जिसमें 121 भाषाएँ केवल दस हजार लोगों तक सीमित है, जिनके द्वारा वे बोली जाती हैं. भाषा विज्ञान और हिन्दी विभाग की अध्यक्ष प्रो. चंदा बेन ने स्वागत वक्तव्य दिया. छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा ने कहा कि पहला-राजनीतिक परतंत्रता से मुक्ति, दूसरा-वैचारिक स्वराज और तीसरा-भाषायी स्वराज की प्राप्ति, भाषायी स्वराज मातृभाषा को महत्त्व देकर ही प्राप्त किया जा सकता है.

वाद-विवाद प्रतियोगिता में विजयी प्रतिभागियों को मुख्य समारोह में पुरस्कृत किया गया. संचालन हिंदी विभाग के प्राध्यापक डॉ राजेंद्र यादव ने किया एवं आभार डॉ आशुतोष ने ज्ञापित किया.

मातृभाषा से ही राष्ट्र की समृद्धि संभव है : प्रो. जैन

सागर, देशबन्धु। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के जवाहरलाल नेहरू ग्रंथालय सभागार में अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर 'हमारी मातृभाषाएं' विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। प्रख्यात भाषाविद और चिन्तक प्रो.वृषभ प्रसाद जैन मुख्य वक्तव्य देते हुए कहा भाषा हमें पहचान देती है और पहचान बनाती है, व्यक्तित्व निर्माण में मातृभाषा भाषा एक महत्त्वपूर्ण कारक है। वर्तमान समय में मातृभाषा की स्थिति को देखते हुए चिंता व्यक्त की और कहा कि आज़ादी के बाद के वर्षों में यह पहचान धूमिल होती जा रही है और भाषायी परतंत्रता बढ़ी है। केवल हिन्दी ही नहीं बल्कि तमिल, मलयालम, तेलगू जैसी तमाम भाषाओं की स्थिति एक जैसी है. भारतीय भाषाओं का व्याकरणकोश अंग्रेजी भाषा से प्रभावित है। हम अभी तक भारतीय भाषाओं के व्याकरण और शब्दकोष निर्माण में पीछे हैं। भाषाओं की समृद्धि से ही राष्ट्र की समृद्धि का सपना देखा जा सकता है। कई उदाहरणों के जरिये मातृभाषा की पहचान करने के तरीके भी बताये।

सांस्कृतिक मूल्य, परंपरा एवं इतिहास को एक सूत्र में बांधती है भाषा: प्रो. नीलिमा गुप्ता

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो.नीलिमा ने कहा मनुष्य अपने जन्म से ही भाषा का प्रयोग शुरू कर देता है। पैदा होने के बाद सबसे पहला शब्द वह 'माँ' सीखता है. इसलिए इस शब्द से उसको अलग नहीं किया जा सकता। यूनेस्को ने मातृभाषा दिवस मनाने का प्रावधान किया. भारत 19500 भाषाओं से समृद्ध देश है जिसमें 121 भाषाएँ केवल दस हज़ार लोगों तक सीमित है, जिनके द्वारा वे बोली जाती हैं. इस तरह 22 प्रमुख भाषाएँ जो भारत के लोग बोलते हैं उन्हें संविधान में शामिल किया गया. मातृभाषा की महत्ता बताते हुए कहा कि नोबेल पुरस्कार से ज्यादातर उन्हीं लोगों को सम्मानित किया गया है जिन्होंने अपना कार्य मातृभाषा में किया है. सांस्कृतिक मूल्य, परंपरा एवं इतिहास इन तीनों को भाषा ही बाँध कर रखती है। भाषा विज्ञान और हिन्दी विभाग की अध्यक्ष प्रो. चन्दा बेन ने स्वागत वक्तव्य दिया और कहा स्वतंत्रता संग्राम के पश्चात एकीकरण के कारण भाषा के रूप में भारतेंदु युग के सभी भाषाविदों का अहम योगदान रहा है. उन्होंने त्रिभाषा सूत्र के माध्यम से बात रखते हुए कहा कि प्राथमिक शिक्षा हमारी मातृभाषा में होनी चाहिए। छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो.अम्बिकादत्त शर्मा ने विषय प्रवर्तन किया और कहा आज़ादी के तीन सोपान होते हैं जिन्हें पार करके आजादी पाई जा सकती है। पहला– राजनीतिक परतंत्रता से मुक्ति, दूसरा–वैचारिक स्वराज और तीसरा–भाषायी स्वराज की प्राप्ति भाषायी स्वराज मातृभाषा को महत्त्व देकर ही प्राप्त किया जा सकता है। उन्होंने प्रसिद्ध कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर और बलवंत गार्गी के बीच वार्तालाप का उद्धरण देते हुए मातृभाषा के महत्त्व के रेखांकित किया। कार्यक्रम का संचालन हिंदी विभाग के प्राध्यापक डॉ.राजेंद्र यादव ने किया एवं आभार डॉ.आशुतोष ने ज्ञापित किया।

आयोजन

सांस्कृतिक मूल्य, परंपरा एवं इतिहास को एक सूत्र में बांधती है भाषा: गुप्ता

मातृभाषा से ही राष्ट्र की समृद्धि संभव हैः प्रो. वृषभ

सागर, आचरण संवाददाता।

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के जवाहरलाल नेहरू ग्रंथालय सभागार में अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर 'हमारी मातृभाषाएं' विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। प्रख्यात भाषाविद और चिन्तक प्रो. वृषभ प्रसाद जैन मुख्य वक्तव्य देते हुए कहा कि भाषा हमें पहचान देती है और पहचान बनाती है. व्यक्तित्व निर्माण में मातृभाषा भाषा एक महत्त्वपूर्ण कारक है. उन्होंने वर्तमान समय में मातृभाषा की स्थिति को देखते हुए चिंता व्यक्त की और कहा कि आज़ादी के बाद के वर्षों में यह पहचान धूमिल होती जा रही है और भाषायी परतंत्रता बढ़ी है. केवल हिन्दी ही नहीं बल्कि तमिल, मलयालम, तेलगू जैसी तमाम भाषाओं की स्थिति एक जैसी है. भारतीय भाषाओं का व्याकरणकोश अंग्रेजी भाषा से प्रभावित है. हम अभी तक भारतीय भाषाओं के व्याकरण और शब्दकोष निर्माण में पीछे हैं। आज नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में मातृभाषा में शिक्षा देने की बात की जा रही है. भाषायी स्वतन्त्रता के साथ आर्थिक स्वतन्त्रता भी जुडी हुई है। इस बात को उन्होंने आंकड़ों और उदाहरणों के माध्यम से समझाया. उन्होंने कहा कि भारत में सबसे समृद्ध शहर मुंबई है. इसका एकमात्र कारण वहां की मातृभाषा है। भारतीय भाषा के फॉण्ट निर्माण का काम आज़ विदेशी कम्पनियां कर रही हैं. भाषायी रूप से समृद्ध होने के बावजूद हम भारतीय भाषाओं के फ़ॉण्ट निर्माण में भी पीछे हैं। भाषाओं की समृद्धि से ही राष्ट्र की समृद्धि का सपना देखा जा सकता है. उन्होंने कई उदाहरणों के जरिये मातृभाषा की पहचान करने के तरीके भी बताये। उन्होंने कहा कि भाषा के बिना मनुष्यता अधूरी है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. नीलिमा ने कहा कि मनुष्य अपने जन्म से ही भाषा का प्रयोग शुरू कर देता है, पैदा होने के बाद सबसे पहला शब्द वह 'माँ' सीखता है. इसलिए इस शब्द से उसको अलग नहीं किया जा सकता. उन्होंने कहा कि यूनेस्को ने मातृभाषा दिवस मनाने का प्रावधान किया. भारत 19500 भाषाओं से समृद्ध देश है जिसमें 121 भाषाएँ केवल दस हज़ार लोगों तक सीमित है, जिनके द्वारा वे बोली जाती हैं. इस तरह 22 प्रमुख भाषाएँ जो भारत के लोग बोलते हैं उन्हें संविधान में शामिल किया गया. मातृभाषा की महत्ता बताते हुए उन्होंने कहा कि नोबेल पुरस्कार से ज़्यादातर उन्हीं लोगों को सम्मानित किया गया है जिन्होंने अपना कार्य मातृभाषा में किया है. सांस्कृतिक मूल्य, परंपरा एवं इतिहास इन तीनों को भाषा ही बाँध कर रखती है. उन्होंने आकड़ों के माध्यम से विश्व में हिंदी भाषा की स्थिति पर बात रखते हुए कहा कि आज दो तिहाई आबादी हिंदी समाचार पत्र पढ़ रही है व विश्व भर के सिनेमाघरों में हिंदी सिनेमा प्रदर्शित होती है. कोविडकाल के दौरान जब सभी चीज़ों का डिजिटलीकरण हुआ उसके साथ हिंदी भाषा की भी तकनीक में सहभागिता बढ़ी है. गूगल के आकड़ों के अनुसार वर्ष 2024 तक हिंदी में मोबाइल उपयोगकर्ताओं की संख्या अंग्रेज़ी से ज्यादा रहेगी. अपने उद्बोधन के अंत में उन्होंने हिंदी भाषा की विविधता को सरलता से समझाया और सभी को मातृभाषा के संवर्धन एवं संरक्षण के लिए संकल्पित होने का संदेश दिया।

भाषा विज्ञान और हिन्दी विभाग की अध्यक्ष प्रो. चन्दा बेन ने स्वागत वक्तव्य दिया और कहा कि स्वतंत्रता संग्राम के पश्चात एकीकरण के कारण भाषा के रूप में भारतेंदु युग के सभी भाषाविदों का अहम योगदान रहा है. उन्होंने त्रिभाषा सूत्र के माध्यम से बात रखते हुए कहा कि प्राथमिक शिक्षा हमारी मातृभाषा में होनी चाहिए. नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने भाषा संबंधों को अधिक प्रगाढ़ बनाने का प्रावधान किया है. छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा ने विषय प्रवर्तन किया और कहा कि इस वर्ष मातृभाषा दिवस आजादी के अमृत महोत्सव वर्ष में आया है. आज़ादी के तीन सोपान होते हैं जिन्हें पार करके आजादी पाई जा सकती है। पहला- राजनीतिक परतंत्रता से मुक्ति, दूसरा-वैचारिक स्वराज और तीसरा-भाषायी स्वराज की प्राप्ति. भाषायी स्वराज मातृभाषा को महत्व देकर ही प्राप्त किया जा सकता है. उन्होंने प्रसिद्ध कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर और बलवंत गार्गी के बीच वार्तालाप का उद्धरण देते हुए मातृभाषा के महत्त्व के रेखांकित किया। व्याख्यान के उपरांत मातृभाषा दिवस के उपलक्ष्य में विवि स्तर पर आयोजित 'आत्मनिर्भरता में मातृभाषा का योगदान' विषय पर निबंध प्रतियोगिता एवं 'बहुभाषिकता भारत के लिए वरदान है' विषय पर वाद-विवाद प्रतियोगिता में विजयी प्रतिभागियों को मुख्य समारोह में पुरस्कृत किया गया. कार्यक्रम का संचालन हिंदी विभाग के प्राध्यापक डॉ राजेंद्र यादव ने किया एवं आभार डॉ आशुतोष ने ज्ञापित किया।

आयोजन में प्रो. बीआई. गुरु, प्रो. नवीन कांगो, प्रो. निवेदिता मैत्रा, प्रो. उमेश पाटिल, डॉ राकेश सोनी, डॉ अलीम खान, डॉ हिमांशु, विवेक विसारिया, डॉ शशि सिंह, डॉ. अरविन्द, डॉ मुकेश साहू सहित कई शिक्षक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित थे।

भाषा हमें पहचान देती है और पहचान भी बनाती है : प्रो. वृषभ प्रसाद जैन

सागर(नवदुनिया प्रतिनिधि)। डा. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के जवाहरलाल नेहरू ग्रंथालय सभागार में अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर हमारी मातृभाषाएं विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। भाषाविद और चिंतक प्रो. वृषभ प्रसाद जैन मुख्य वक्तव्य देते हुए कहा कि भाषा हमें पहचान देती है और पहचान बनाती है। व्यक्तित्व निर्माण में मातृभाषा भाषा एक महत्वपूर्ण कारक है।

उन्होंने वर्तमान समय में मातृभाषा की स्थिति को देखते हुए चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि आदी के बाद के वर्षों में यह पहचान धूमिल होती जा रही है और भाषायी परतंत्रता बढ़ी है। केवल हिन्दी ही नहीं बल्कि तमिल, मलयालम, तेलगू जैसी तमाम भाषाओं की स्थिति एक जैसी है। भारतीय भाषाओं का व्याकरणकोश अंग्रेजी भाषा से प्रभावित है और हम अभी तक भारतीय भाषाओं के व्याकरण और शब्दकोष निर्माण में पीछे हैं। भारत में सबसे समृद्ध शहर मुंबई है। इसका एकमात्र कारण वहां की मातृभाषा है। भारतीय भाषा के फांट निर्माण का काम आज विदेशी कंपनियां कर रही हैं। भाषायी रूप से समृद्ध होने के बावजूद हम भारतीय भाषाओं के फांट निर्माण में भी पीछे हैं। भाषाओं की समृद्धि से ही राष्ट्र की समृद्धि का सपना देखा जा सकता है। उन्होंने कहा कि भाषा के बिना मनुष्यता अधूरी है।

मातृभाषा दिवस पर विजेताओं को पुरस्कार देती कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता। ● नवदुनिया

सांस्कृतिक मूल्य, परंपरा एवं इतिहास को एक-सूत्र में बांधती है भाषा: कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. नीलिमा ने कहा कि मनुष्य अपने जन्म से ही भाषा का प्रयोग शुरू कर देता है। पैदा होने के बाद सबसे पहला शब्द वह मां सीखता है और इसलिए इस शब्द से उसको अलग नहीं किया जा सकता। उन्होंने कहा कि यूनेस्को ने मातृभाषा दिवस मनाने का प्रावधान किया। भारत 19500 भाषाओं से समृद्ध देश है जिसमें 121 भाषाएं केवल दस हार लोगों तक सीमित हैं, जिनके द्वारा वे बोली जाती हैं। इस तरह 22 प्रमुख भाषाएं जो भारत के लोग बोलते हैं उन्हें संविधान में शामिल किया गया। उन्होंने कहा कि नोबेल पुरस्कार से यादातर उन्हीं लोगों को सम्मानित किया गया है जिन्होंने अपना कार्य मातृभाषा में किया है।

आदी के तीन सोपान होते हैं जिन्हें पार करके आजादी पाई जा सकती है: भाषा विज्ञान और हिन्दी विभाग की अध्यक्ष प्रो. चन्दा बेन ने कहा कि स्वतंत्रता संग्राम के बाद एकीकरण के कारण भाषा के रूप में भारतेंदु युग के सभी भाषाविदों का अहम योगदान रहा है। उन्होंने त्रिभाषा सूत्र के माध्यम से बात रखते हुए कहा कि प्राथमिक शिक्षा हमारी मातृभाषा में होनी चाहिए। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने भाषा संबंधों को अधिक प्रगाढ़ बनाने का प्रावधान किया है। छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा ने विषय प्रवर्तन किया और कहा कि इस वर्ष मातृभाषा दिवस आजादी के अमृत महोत्सव वर्ष में आया है। आदी के तीन सोपान होते हैं जिन्हें पार करके आजादी पाई जा सकती है। पहला- राजनीतिक परतंत्रता से मुक्ति, दूसरा-वैचारिक स्वराज और तीसरा-भाषायी स्वराज की प्राप्ति. भाषायी स्वराज मातृभाषा को महत्त्व देकर ही प्राप्त किया जा सकता है।

वाद-विवाद प्रतियोगिता के विजेता सम्मानित

व्याख्यान के उपरांत मातृभाषा दिवस के उपलक्ष्य में विश्वविद्यालय स्तर पर आयोजित आत्मनिर्भरता में मातृभाषा का योगदान विषय पर निबंध प्रतियोगिता एवं बहुभाषिकता भारत के लिए वरदान है। विषय पर वाद-विवाद प्रतियोगिता में विजयी प्रतिभागियों को मुख्य समारोह में पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम का संचालन हिंदी विभाग के प्राध्यापक डा. राजेंद्र यादव ने किया एवं आभार डा. आशुतोष ने ज्ञापित किया। आयोजन में प्रो. बीआई गुरु, प्रो. नवीन कांगो, प्रो. निवेदिता मैत्रा, प्रो. उमेश पाटिल, डा. राकेश सोनी, डा. अलीम खान, डा. हिमांशु, विवेक विसारिया, डा. शशि सिंह, डा. अरविन्द, डा मुकेश साहू आदि उपस्थित थे।

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर विश्वविद्यालय की जवाहरलाल नेहरू लाइब्रेरी सभागार में व्याख्यान

'हिंदी नहीं सभी क्षेत्रीय भाषाओं की एक जैसी स्थिति, इनके व्याकरण और शब्दकोश निर्माण की जरूरत'

भास्कर संवाददाता | सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के जवाहरलाल नेहरू ग्रंथालय सभागार में सोमवार को अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर हमारी मातृ-भाषाएं विषय पर व्याख्यान हुआ। इसमें भाषाविद और चिंतक प्रो. वृषभ प्रसाद जैन ने कहा कि भाषा हमें पहचान देती है और पहचान बनाती है। व्यक्तित्व निर्माण में मातृभाषा एक महत्त्वपूर्ण कारक है। उन्होंने वर्तमान समय में मातृभाषा की स्थिति को देखते हुए चिंता व्यक्त की और कहा कि आजादी के बाद के वर्षों में यह पहचान धूमिल होती जा रही है और भाषाई परतंत्रता बढ़ी है। केवल हिंदी ही नहीं बल्कि तमिल, मलयालम, तेलुगू जैसी तमाम भाषाओं की स्थिति एक जैसी है। भारतीय भाषाओं का व्याकरण कोश अंग्रेजी भाषा से प्रभावित है। हम अभी तक भारतीय भाषाओं के व्याकरण और शब्दकोष निर्माण में पीछे हैं। आज नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में मातृभाषा में शिक्षा देने की बात की जा रही है। भाषाई स्वतंत्रता के साथ आर्थिक स्वतंत्रता भी जुड़ी हुई है। इस बात को उन्होंने आंकड़ों और उदाहरणों के माध्यम से समझाया। उन्होंने कहा कि भारत में सबसे समृद्ध शहर मुंबई है, इसका एकमात्र कारण वहां की मातृभाषा है।

सागर | विश्वविद्यालय के सभागार में सेमिनार को संबोधित करते अतिथि।

भाषा विज्ञान और हिंदी विभाग की अध्यक्ष प्रो. चंदा बेन ने कहा कि स्वतंत्रता संग्राम के बाद एकीकरण के कारण भाषा के रूप में भारतेंदु युग के सभी भाषाविदों का अहम योगदान रहा है। उन्होंने त्रिभाषा सूत्र के माध्यम से बात रखते हुए कहा कि प्राथमिक शिक्षा हमारी मातृभाषा में होनी चाहिए। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने भाषा संबंधों को अधिक प्रगाढ़ बनाने का प्रावधान किया है। छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. अंबिकादत्त शर्मा ने विषय प्रवर्तन किया और कहा कि इस वर्ष मातृभाषा दिवस आजादी के अमृत महोत्सव वर्ष में आया है। आजादी के तीन सोपान होते हैं जिन्हें पार करके आजादी पाई जा सकती है। पहला राजनीतिक परतंत्रता से मुक्ति, दूसरा वैचारिक स्वराज और तीसरा भाषाई स्वराज की प्राप्ति। भाषाई स्वराज मातृभाषा को महत्त्व देकर हीं प्राप्त किया जा सकता है। उन्होंने कवि रवींद्रनाथ टैगोर और बलवंत गार्गी के बीच वार्तालाप का उद्धरण देते हुए मातृभाषा के महत्त्व के रेखांकित किया। वहीं इस दौरान विश्वविद्यालय स्तर पर आयोजित आत्मनिर्भरता में मातृभाषा का योगदान विषय पर निबंध प्रतियोगिता एवं बहुभाषिकता भारत के लिए वरदान है विषय पर वाद विवाद प्रतियोगिता में विजयी प्रतिभागियों को मुख्य समारोह में पुरस्कृत किया गया। इस दौरान प्रो. नवीन कांगो, प्रो. निवेदिता मैत्रा, प्रो. उमेश पाटिल, डॉ. राकेश सोनी, डॉ. अलीम खान, डॉ. शशि सिंह, डॉ. मुकेश साहू सहित कई शिक्षक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी मौजूद थे। संचालन हिंदी विभाग के प्राध्यापक डॉ. राजेंद्र यादव ने किया। आभार डॉ. आशुतोष ने माना।

सेमिनार... विवि में बुंदेलखंड की सांस्कृतिक विरासत पर छायाचित्रों की प्रदर्शनी लगाई

सागर | डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास विभाग में बुंदेलखंड की सांस्कृतिक विरासत पर केंद्रित राष्ट्रीय संगोष्ठी के दौरान छायाचित्रों की प्रदर्शनी लगाई गई। सागर की इंटेक चेप्टर के अनुभव जैन द्वारा सागर अंचल की सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक विरासतों को प्रदर्शित करने वाली प्रदर्शनी को देखने बड़ी संख्या में लोग पहुंचे। विभागाध्यक्ष प्रो. नागेश दुबे ने बताया इस दौरान संगोष्ठी में सम्मिलित विद्वानों, सभी प्रतिभागियों एवं संगोष्ठी में आए सभी आगंतुकों ने प्रदर्शनी को देखकर सराहना की।

विश्वविद्यालय में सारस्वत व्याख्यान का आयोजन

जागरण, सागर। आजादी की 75 वीं वर्षगांठ के अवसर पर भारत सरकार द्वारा आजादी का अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है। जिसके तत्वावधान में डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग में सारस्वत व्याख्यान का आयोजन 25 फरवरी को सुबह 11.00 बजे किया जा रहा है। प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग के अध्यक्ष प्रो. नागेश दुबे ने बताया कि डॉ. राघवेन्द्र प्रताप सिंह के संयोजकत्व में 'संस्कृति प्रवाह' व्याख्यान श्रृंखला के अंतर्गत 'आधुनिक युग में श्रीमद्भागवतगीता की प्रासंगिकता' पर एक व्याख्यान का आयोजन किया गया है। जिसमें सारस्वत अतिथि अजयदीप सिंह, पूर्व कमिश्नर, अलीगढ़ उप्र एवं नरेन्द्र सिंह, पूर्व विभागाध्यक्ष, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग मुरलीमनोहर टाउन स्नातकोत्तर महाविद्यालय बलिया उप्र होंगे।

विश्वविद्यालय में सारस्वत व्याख्यान का आयोजन

सागर। आजादी की 75वीं वर्षगांठ के अवसर पर भारत सरकार द्वारा आजादी का अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है। जिसके तत्वावधान में डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग में एक सारस्वत व्याख्यान का आयोजन 25 फरवरी को पूर्वाह्न 11 बजे किया जा रहा है। प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग के अध्यक्ष प्रो. नागेश दुबे ने बताया कि डॉ. राघवेन्द्र प्रताप सिंह के संयोजकत्व में संस्कृति प्रवाह व्याख्यान श्रृंखला के अंतर्गत आधुनिक युग में श्रीमद्भागवतगीता की प्रासंगिकता पर एक व्याख्यान का आयोजन किया गया है। जिसमें सारस्वत अतिथि अजय दीप सिंह, पूर्व कमिश्नर, अलीगढ़ (उ.प्र.) एवं नरेन्द्र सिंह, पूर्व विभागाध्यक्ष, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग मुरली मनोहर टाउन स्नातकोत्तर महाविद्यालय बलिया (उ.प्र.) होंगे।

विश्वविद्यालय में सारस्वत व्याख्यान का आयोजन

सागर, आचरण। आज़ादी की 75 वीं वर्षगाँठ के अवसर पर भारत सरकार द्वारा आज़ादी का अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है। जिसके तत्वावधान में डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग में एक सारस्वत व्याख्यान का आयोजन 25.02.2022 को पूर्वाह्न 11 बजे किया जा रहा है। प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग के अध्यक्ष प्रो. नागेश दुबे ने बताया कि डॉ. राघवेन्द्र प्रताप सिंह के संयोजकत्व में 'संस्कृति प्रवाह' व्याख्यान श्रृंखला के अंतर्गत 'आधुनिक युग में श्रीमद्भागवतगीता की प्रासंगिकता' पर एक व्याख्यान का आयोजन किया गया है। जिसमें सारस्वत अतिथि अजय दीप सिंह, पूर्व कमिश्नर, अलीगढ़ (उ.प्र.) एवं नरेन्द्र सिंह, पूर्व विभागाध्यक्ष, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग मुरली मनोहर टाउन स्नातकोत्तर महाविद्यालय बलिया (उ.प्र.) होंगे।

यूटीडी ने बीटीआईई सागर को 3-2 से शिकस्त दी

सागर, आचरण। शारीरिक शिक्षा विभाग डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यार्लय सागर के तत्वावधान में आयोजित अन्तरमहाविद्यालय टेबल टेनिस (पुरुष) प्रतियोगिता का फायनल मैच यू टी डी सागर एवं बीटीआईई सागर के मध्य खेला गया जिसमें यू टी सागर ने बीटीआईई सागर को 3-2 से पराजित कर एक बार फिर ट्राफी अपने नाम की । मैच उपरांत बीटीआईई के प्राचार्य डॉ राजू टंडन के मुख्यातिथ्य में विजेता उपविजेता टीम को ट्राफी प्रदत्त की, अध्यक्षता डॉ सुमन पटेल ने एवं विशिष्ठ अतिथि डॉ संदीप जैन एवं डॉ मनीष पुरोहित। प्रतियोगिता के संगठन सचिव महेंद्र कुमार । इस अवसर पर विनय शुक्ला, अनवर खान, गौरव भट्ट, आकाश लिटोरिया, सुरेश कोरी उपस्थित रहे।